जिन्हे लिखना पडा है खूने दिल खूने तमन्ना से,
किताबे जिन्दगी मे ऐसे अफसाने भी शामिल हैं।

'हज्री' जब्रे मशीयत[1] इस से बढकर और क्या होगा,
करम[2] होने नही देता करम पर वो तो माइल हैं।

---

१. भाग्य की धाधली २ कृपा।

यूं उन की सब जफ़ाओं पे पर्दे गिरा दिये,
जब भी चला है ज़िक्रे जफ़ा मुस्करा दिये।

सरसब्ज़ हो सको न मोहब्बत की सरज़मीं,
आंखों ने कितने अश्क के दरिया बहा दिये।

कैसे बुझे अब आतशे[1] दिल अश्क ही नहीं,
जितने थे अश्क पाए सनम पर चढ़ा दिये।

दामन में तार है न गरीबां में कोई तार,
दस्ते जुनूं[1] ने इश्क के कर्ज़े चुका दिए।

कैसी बहार, दामने अब्रे बहार से,
वो बिजलियां गिरी कि चमन तक जला दिये।

दाता का हाथ खाली था जिस वक्त ऐ 'हज़ीं',
उस वक्त तूने दस्ते तलब क्यों बढ़ा दिये।

किसी की याद जब-जब आ गई है,
दिले यखबस्ता[1] को गरमा गई है।

मोहब्बत यास[2] बनकर छा गई है,
फज़ाए ज़िन्दगी थर्रा गई है।

कभी तो फर्ते गिरिया[3] से लबों पर,
हमीं भी इन्तकामन आ गई है।

अमा अब ढूंढती है आसमां पर,
ज़मीं से ज़िन्दगी घबरा गई है।

वो जब-जब हाले दिल सुनकर हंसे है,
उदासी और गहरी छा गई है।

'हज़ी' कैसी हवाएं चल रही है,
वफ़ा की शाख तक मुर्झा गई है।

---

१. बर्फ़ जैसा जमा हुआ २. निराशा ३. अति दुख।

बावफ़ा भी वो बेवफ़ा होगा,
दिल ने यह धोखा खा लिया होगा।

सहव[1] इन्सां से हो ही जाता है,
बेवफ़ा तुझको कह दिया होगा।

यादेमाज़ी[2] में उनकी पलकों पर,
कोई आंसू मचल रहा होगा।

चाक दामां तो वो भी थे लेकिन,
चाक दामन का सी लिया होगा।

अश्के ग़म बेसबब नहीं बहते,
कोई अरमान लुट गया होगा।

कितना मग़मूम[3] है 'हज़ी' अब तक,
आप ने भी यह सुन लिया होगा।

वतन मे चार तरफ शोरिशे वहार है आज,
दिले 'हज़ी' को मुयस्सर वहुत करार है आज।

हर इक के कब्ज़े में है सल्तनत मसर्रत की,
गदाए मुल्क जमाने का ताजदार है आज।

हर एक आख से किरनें खुशी की फूटती हैं,
वस एक चश्मे उदू है जो अश्कवार है आज।

जुनू को खून रुलाए यह वो वहार नही,
जो चाक सीने का सीती है वो वहार है आज।

हुआ था आज के दिन ख्वाव पूरा सदियों का,
किसी के वादए फरदा का एतवार है आज।

यह यौम-यौमे मसर्रत है इस क़दर ऐ 'हज़ी',
क़रार सीनें में आने को बेकरार है आज।

'.

एहसान लूं किसी का मुझे नागवार है,
उनका करम भी ख़ातिरे नाज़ुक पे बार है।

तेरे ही दम से दहर में अज़मत है हुस्न की,
ऐ इश्के-नामुराद तू ही बे विक़ार है।

इक दूसरे से दस्तो ग़रीबां रहे सदा,
दिल होशियार है न ख़िरद होशियार है।

सावन की धूप है यह अभी है, अभी नहीं,
क्या एतबारे हस्तिए नापायदार है।

फ़सले बहार ही पे फ़क़त मुनहसिर नहीं,
दिल शाद गर 'हज़ी' है तो हर दम बहार है।

उनके शानों से गुज़र कर जो सबा आई है,
नकहते ज़ुल्फ़े मुअम्बर[1] भी चुरा लाई है।

दिल के समझाने-बुझाने को चली आई है,
दिल तो सौदाई है क्या अक्ल भी सौदाई है।

जब भी आमादा हुआ तर्के मुहब्बत पर दिल,
और शिद्दत से तेरी याद हमें आई है।

ग़म में हँसने को ख़ुशी तो नहीं कहते ए दोस्त,
यूं तो आने को कई बार हँसी आई है।

मौत प्यारी है तुझे या ग़मे हिज्रां की घुटन,
ज़िन्दगी तू ही बता किस की तमन्नाई है।

आप बरगश्ता[2] 'हज़ीं' से जो नज़र आते हैं,
क्या कोई उनकी मुहब्बत में कमी पाई है।

---

१. बालों की सुगन्ध २. नाराज़।

ऐसे बेगानए बहार हुए,
फूल अपने न अपने ख़ार हुए।

पुरसिशे[1] गम कभी किसी से न की,
आप ही अपने गमगुसार हुए।

आपका है, न कुछ हमारा क़ुसूर,
गर्दिशे वक़्त के शिकार हुए।

ये मसीहाई की बहारों ने,
जख्मे दिल सारे लालाजार हुए।

तेरी क्या बात है, सितम भी तेरे,
तेरे इकराम[2] में शुमार हुए।

सबकी आंखों में खार से खटके,
कब किसी के गले का हार हुए।

फूल खुशियो के जो चुने थे 'हज़ी',
मेरे दामन में आ के खार हुए।

१. पूछताछ २. कृपा।

कुछ भी एहसास[1] की बिना पे कहो,
यह न आफत है और न राहत[2] है।
जिन्दगी सिर्फ जिन्दगी है 'हजी',
जिन्दगी दार[3] है न दावत है।

गम ही कुल काइनात[4] है अपनी,
इक फसुर्दा[5] हयात है अपनी।
आप चाहें तो कोई बात बने,
जिन्दगी बिगडी बात है अपनी।

चाद-तारों मे रोशनी-सी नही,
अब गुलों में वो ताजगी-सी नही।
जब से दिल अपना बुझ गया है 'हजी'
हुस्न में भी वो दिलकशी-सी नही।

इससे इकार कब है दुनिया में,
इशरतों[6] की भी मैं बरसती है।
लेकिन ऐसे भी लोग हैं जिन की,
जिन्दगी मौत को तरसती है।

---

१. भावना २. आराम ३. सूली ४. दौलत ५. दुखी ६. खुशिया।

आपका गर सहारा मिल जाता,
बहरे ग़म[1] का किनारा मिल जाता।
वक़्त[2] झुककर सलाम करता हमें,
आपका गर इशारा मिल जाता।

सहबा[3] बनी है किसलिए और जाम किसलिए,
है रिन्दे मैकदा[4] 'हज़ीं' बदनाम किसलिए।
गर वक्फ़े मैकदा[5] भी हुई क्या गुनाह है,
दो रोजा जिन्दगी पे है इल्जाम किसलिए।

जो मुसीबत पड़ी है भारी है,
चोट गहरी है ज़ख्म कारी[6] है।
इक अजब कशमकश[7] का आलम है,
इश्क़ ईमां है, जान प्यारी है।

मय नहीं अश्क ग़म ही पी लेंगे,
हम किसी हाल में भी जी लेंगे।
वारे[8] अहसां उठाए कौन 'हज़ीं',
आप ही दिल के ज़ख्म सी लेंगे।

---

१. दुख का सागर २. भाग्य ३. शराब ४. शराबी ५. मधुशाला की भेंट ६. गहरा ७. असमंजस ८. बोझ।

मए इशरत[1] की है तलब लेकिन,
जहर पीना पड़ा तो पी लेंगे।[2]
जब सहारे नहीं रहेंगे 'हज़ीं',
मौत के आसरे पे जी लेंगे।

माना यह सोगवार हूं मैं 'हज़ीं',
माना यह दिल फ़िगार[3] हूं मैं 'हज़ीं'।
माना वाबस्तए ख़िज़ां[4] हूं मगर,
एतबारे बहार हूं मैं 'हज़ीं'।

एक मौहूम[5]-सी ख़ुशी के लिए,
किस क़दर कुल्फ़तें[6] उठाई हैं।
ज़िन्दगानी का साथ देने में,
हाय क्या ज़िल्लतें[7] उठाई हैं।

ज़िन्दगानी को ख़ून से सींचा,
उससे लेकिन हमें मिला क्या है?
सिर्फ़ नाकाम हसरतों के सिवा,
ज़िन्दगी ने हमें दिया क्या है?

---

१ खुशी २. दुखी ३. घायल हृदय ४. पतझड़ से जुड़ा हुआ ५. [illegible]
६ मुसीबतें ७ घोर अपमान।

बेवफाई है शेवए[1] दुनिया,
यह तुझे हर कदम पे दम देगी।
इन्तकामन[2] ही कुछ 'हजी' हंस ले,
दुनिया तो तुझको गम पे ग़म देगी।

बहारों की दुनिया नजारों की दुनिया,
हसीं है बहुत चांद-तारों की दुनिया।
मगर अपने इशरतकदे[3] से निकलकर,
कभी देखिये ग़म के मारों की दुनिया।

लुट न जाएं कहीं खुशिया मेरी,
बस यही फ़िक्र बनी रहती है।
मैंने देखा है खुशी पर गम की,
एक चादर-सी तनी रहती है।

मैं तश्नाकाम[4] तश्नादहन[5] हूं तो क्या हुआ,
औरों की मैंने प्यास बुझाई है ऐ 'हजीं'।
गुम करदए[6] हयात हूं लेकिन ये फ़ख्र है,
औरों को मैंने राह दिखाई है ए 'हजीं'।

---

१. ढंग २. बदले की भावना से ३. आरामघर ४. असफल ५. प्यासा ६. भटका हुआ।

ज़ख्मे दिल मेहरबां दिए थे अगर,
उन पे मरहम लगा दिया होता।
ये भी तुझ को अगर न था मंजूर,
ज़हर दे कर सुला दिया होता !

हो के मजबूर शिद्दते गम[1] से,
हमने अश्कों में गम समोए हैं।
आतिशे दिल बुझाने की खातिर,
रात की खलवतों[2] में रोए है।

ज़िन्दगानी से प्यार क्या कीजे,
ज़िन्दगानी तो कज अदा[3] निकली।
साज़े हस्ती को जब भी छेड़ा 'हज़ी',
गम में डूबी हुई सदा निकली।

जितना उसकी तरफ मैं बढ़ता गया,
दामने ज़िन्दगी सिमटता गया।
जितनी मुझसे गुरेज़ां[4] होती गई,
ज़िन्दगानी से मैं चिमटता गया।

---

१. ग़म की अधिकता २. एकाकीपन ३. टेढ़ी अदा वाली ४. दूर।

अश्क पीने से मन बुझे ए 'हज़ी',
दिल की अब भी राख बाकी है।
ऐसे मरते हजार मर कर भी,
जिन्दगी के हवास बाकी हैं।

क्यों हो बरगश्तए[1] हयात 'हज़ी',
काम सारा ही करना बाकी है।
जिन्दगी में अभी किया क्या है?
जीना बाकी है, मरना बाकी है।

कद्रो कीमत बढ़ेगी बादे फ़ना,
हम कैदे हयात[2] सस्ते हैं।
जीते जी कद्र क्यों करे दुनिया,
इसमें मुर्दा परस्त[3] बसते हैं।

रंज में भी खुशी की बात करो,
इस तरह से बसर हयात करो।
मौत जब आए मर भी जाना 'हज़ी',
जीते-जी जिन्दगी की बात करो।

---

१. नाराज व दुखी २. जीवन रूपी कैद ३. पूजने वाले।

सर निगू[1] सब को होना पडता है
ये 'हज़ी' खुद को क्या समझते है ?
उनको भी सर-बसजदा[2] देखा है,
लोग जिनको खुदा समझते है !

ऐ सबाते खुदी के मतवालो,
इस जहा में सबात किस को है ?
मैं हूं, तुम हो या और कोई हो,
या शऊरे हयात किसको है ?

मेरी मजबूरियां न पूछ 'हज़ी',
सोज को भी मैं साज़ कहता हू।
जिनमें बन्दों के भी नही औसाफ[3],
उनको बन्दानवाज़ कहता हू।

और कुछ रज जमाने के उठा लेने दे,
और अर्मान लुटाने हैं लुटा लेने दे।
फिर खुशी से तेरे हमराह चलूंगा ए अजल[4],
दिल लगाने की सज़ा पूरी तो पा लेने दे।

---

१. नीचे सिर २. सिर झुकाए हुए ३. गुण ४. मौत।

ग़म ही मक़सद अगर हयात का है,
कौन दुनिया के रंजो-ग़म झेले।
लेने वाले तेरा करम होगा,
मौत के बदले जिन्दगी ले ले।

दर्द से कोई क्यों हो बरगश्ता,
दर्द तो जिन्दगी की क़ीमत है।
क़र्ज़ की इस अदायगी में 'हज़ी',
जो खुशी मिल गई गनीमत है।

इतनी ख्वाहिश ज़रूर है मेरी,
यह नहीं कहता कायनात मिले।
गर न वो मिल सकें तो मौत मिले,
वो मिलें तो मुझे हयात मिले।

वो न आए कभी अयादत[1] को,
दर्द बढ़कर दवा हुआ तो क्या!
ज़िन्दगी को गुज़ारने के लिए,
मौत ही आसरा हुआ तो क्या!

---

१. इलाज।

जब कभी गर्के गम[1] हुआ हूं 'हज़ी',
हर खुशी ने मुझे पुकारा है।
जब भी मरने की दिल मे ठानी है,
ज़िन्दगी ने मुझे पुकारा है।

इनायत मान कर दिल मे जगह दी,
'हज़ी' गर दर्द भी पाया किसी से।
गिला करना मेरी आदत नही है,
गिले वर्ना बहुत हैं ज़िन्दगी से।

---

१. दुख में डूबा।

मेरी ओर से

हज़ी साहब ने 'जाने-हज़ी' में अपने कुछ कलाम अपने पाठकों को सन् १९७० में प्रस्तुत किये थे। 'जाने हज़ी' को हज़ी साहब ने मुझे समर्पित किया था जिसमें उन्होंने लिखा था—'रफीक-ए-हयात के नाम जिसने मेरे जज्बात को समझा'। हज़ी साहब ने 'जाने हज़ी' के बाद और भी बहुत कुछ लिखा मगर दुर्भाग्यवश उनके जीवन-काल में प्रकाशित न हो सका। आज वे नहीं हैं परन्तु उनका साहित्य अमर है। अब उनके बाद मेरा दायित्व बढ गया है कि उनके साहित्य को उनके पाठको तक पहुचाने का प्रयास करूं। इसी कडी में यह पुस्तक 'दिल-ए-हज़ी' आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। वैसे इसका प्रकाशन दो वर्ष पूर्व हो जाता मगर न जाने प्रकाशक के सामने क्या मजबूरी रही कि इसके प्रकाशन में विलम्ब होता गया।

आशा करती हूं कि आप सभी 'दिल-ए-हज़ी' के माध्यम से हज़ी साहब के कवि-हृदय की गहराइयों तक पहुचने मे सफल हो सकेंगे।

मैं श्री सत्यप्रकाश गुप्ता की आभारी हूं जिन्होंने इस संकलन में गज़लों और कतआत को करीने से लगाने, उनका संग्रह करने तथा कुछेक का अनुवाद करने में अथक मेहनत कर अपने सभी हक अदा कर दिये हैं।

मैं उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री मुहम्मद उस्मान

क़तआत

ज़िन्दगी के निशातखाने[1] में,
कितनी खुशियों का रोज़ मातम है।
फिर भी उसको निशात समझा है,
कितनी गफ़लत में इब्न ए आदम[2] है।

दौलत-ए-दर्द मिली मुझको फरावानी[3] से,
दिल को बहलाने की लेकिन कोई हिकमत[4] न मिली।
देने वाले मुझे औसाफ़-ए-हमीदा[5] तो दिए,
तेरे दरबार से लेकिन मुझे किस्मत न मिली।

हंसते-हसते कट गए है दिन सभी,
रोते-रोते कट गयी रातें 'हज़ी',
गम की पर्दादार थी मेरी हंसी,
छुप गयी यू राज की बातें 'हज़ी'

हाल दिल का सुना दिया उनको,
अब यह गम है क्यो सुनाया उन्हे।
अब मलामत[6] ये कर रहा है जमीर[7],
राज़दा[8] ग़म का क्यो बनाया उन्हें।

---

१. विलास का स्थान २. आदमी ३ खुले हाथ से ४ तरीका
५. अच्छी खूबिया, तारीफ के लायक ६. धिक्कार ७. [illegible]
८. जानने वाला।

एक दुनिया ने गो सताया हमें,
हमने उनको कभी सताया नहीं।
यूं तो लाखों गुनाह किए हैं 'हज़ी',
दिल किसी का मगर दुखाया नहीं।

खुशी में न सही गम में सही, बसर तो हुई,
किसी तरह शब[1]-ए-ग़म की मेरी सहर[2] तो हुई।
यह माना मिल न सका जिन्दगी में कोई मुझे,
यह कम नहीं कोई याद हमसफ़र तो हुई।

अक्ल की फितना कारियां[3] तो देख,
आसमानों पे चढ़ती जाती है।
और अपनी जमीन पर ए 'हज़ी',
तल्ख़ी[4]-ए-ज़ीस्त बढ़ती जाती है।

जिनसे दुनिया की हो दिल आजारी[5],
ऐसी खुशियों का क्या करूंगा मै!
मुझको दुनिया की है खुशी मलहूज[6],
ग़म ही दे, रो लिया करूंगा मैं।

---

१. रात २. सुबह ३. फसाद फैलाना ४. कड़वापन ५. दिल दुखाई ६. मजूर।

दामान[1]-ए-सब्र[2] हाथ से छूटा नही कभी,
गो तेरी याद दिल का सहारा ना हो सकी।
ए दोस्त मयकदों[3] ने पुकारा वहुत मगर,
तौहीने[4] दर्दे-इश्क गवारा[5] ना हो सकी।

हर नफस[6] लाता है पैगाम ए विसाल[7],
हर नफस मुझको पयाम[8]-ए-यार है।
हर नफस रोता है मज़िल के करीब,
कर रही यू मज़िल-ए-दुश्वार[9] है।

निगाह-ए-यार को पैगाम-ए-ग़म देना तो आता है,
किसी हालत में भी वो गम गुसार-ए-दिल[10] नही होती।
'हज़ी', दुश्वारियां[11] रखती हैं सरगर्म अमल[12] सबको,
बड़ी मुश्किल से कटती उम्र गर मुश्किल नही होती।

राह-ए-चमन ही याद नही जाऊ अब कहा?
यह भी सितम है तेरा कि छोडा है दाम[13] से।
गुलशन नही, बहार नही, हमसफ़र[14] नही,
सैयाद[15] कैसे वक्त पे छोड़ा है दाम से।

---

१. परतू २. धीरज ३. शराबखाना ४ बेइज्जती ५. बर्दाश्त ६. सांस ७ मुलाकात का संदेश ८. संदेश ६ कठिन १० दिल का ग़म भुलाने वाली ११. कठिनाइयां १२. कर्तव्य में तत्पर १३. जिवरा १४. साथी १५. शिकारी

खुमख़ानाए[1] अज़ल[2] से मुझे भी मिली मगर,
वो मय जो सिर्फ़ तल्ख़[3] थी जिसमें मज़ा न था।
किस से मय[4]-ए निशात[5] तलब[6] करता ए 'हज़ी ?
जब साक़िए[7] अज़ल ही मेरा आशना[8] न था।

दो-चार लम्हे गम को भुलाने का शग्ल[9] है,
दिल की नहीं वो प्यास जो बुझ जाए जाम से।
मुझ से गुनाहगार की बख्शीश[10] का दिन 'हज़ी',
मशहूर है जहां में कयामत[11] के नाम से।

न पूछ ए हमनशीं[12] कारण मेरे ख़ामोश रहने का,
कुछ न कुछ तो है जिसके सबब ख़ामोश रहता हूं।
वो था आगाज[13]-ए-उल्फ़त, याद से मदहोश रहता था,
यह है अंजाम[14]-ए-उल्फत हर घड़ी बेहोश रहता हूं।

यह राह-ए-इश्क़ की दुश्वारियां अरे तौबा,
क़दम क़दम पे कदम डगमगाए जाते हैं।
वो इब्तदा[15]-ए-मुहब्बत के दिलफरेब फ़रेब,
भुला रहा हूं मगर कब भुलाए जाते हैं।

---

२. शुरू ३. कडवी ४. शराब ५. खुशी ६. मागता वाला ८. जानने वाला ९. काम, शौक १० माफ़ी १२. साथी १३. शुरुआत १४. समाप्ति १५. शुरुआत।

सभी अरमा हुए हैं पूरे,
कोई हसरत नही है बाकी ।
दिल पे एक ज़ख्म कभी खाया था,
वो मगर अब भी हरा है साकी।

खुमख़ानाए[1] अज़ल[2] से मुझे भी मिली मगर,
वो मय जो सिर्फ़ तल्ख़[3] थी जिसमें मज़ा न था।
किस से मय[4]-ए निशात[5] तलब[6] करता ए 'हज़ी'?
जब साक़िए[7] अजल ही मेरा आशना[8] न था।

दो-चार लम्हे गम को भुलाने का शग्ल[9] है,
दिल की नही वो प्यास जो बुझ जाए जाम से।
मुझ से गुनाहगार की बख्शीश[10] का दिन 'हज़ी',
मशहूर है जहां में क़यामत[11] के नाम से।

न पूछ ए हमनशी[12] कारण मेरे ख़ामोश रहने का,
कुछ न कुछ तो है जिसके सबब ख़ामोश रहता हूं।
वो था आग़ाज़[13]-ए-उल्फ़त, याद से मदहोश रहता था,
यह है अंजाम[14]-ए-उल्फ़त हर घड़ी बेहोश रहता हू।

यह राह-ए-इश्क की दुश्वारियां अरे तौबा,
क़दम क़दम पे कदम डगमगाए जाते हैं।
वो इब्तदा[15]-ए-मुहब्बत के दिलफरेब फ़रेब,
भुला रहा हूं मगर कब भुलाए जाते हैं।

---

१. शराबख़ाना २. शुरू ३. कड़वी ४. शराब ५. ख़ुशी ६. मांगता ७. पिलाने वाला ८. जानने वाला ९. काम, शौक़ १० माफ़ी ११. प्रलय १२. साथी १३. शुरुआत १४. समाप्ति १५. शुरुआत।

सभी अरमां हुए हैं पूरे,
कोई हसरत नही है बाकी।
दिल पे एक ज़ख्म कभी खाया था,
वो मगर अब भी हरा है साकी।

'आरिफ' एवं श्री श्रीगोपाल आचार्य की भी आभारी हूं जिनके निबन्धों का उपयोग मैं इस पुस्तक में कर रही हूं। साथ ही श्री खुर्शिद अहमद का आभार मानती हूं जिन्होंने संकलन में मुझे सहयोग दिया।

हम इस पुस्तक को प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर आप तक नहीं पहुंचा सके, इसका हमें खेद रहेगा।

—कमल जैन

वक्त के साथ भी चल सकते हैं,
उसकी रफ्तार बदल सकते हैं।
कुछ भी मुश्किल नहीं उनके लिए जो,
आतिश-ए-इश्क में जल सकते है।

अफ़वा[1]-ए-ज़ोहद[2] शिकन[3] पर मत फूल,
दुनिया है दार-ए-फ़ना[4] यह मत भूल।
तूने देखा कभी अन्जाम[5]-ए-हुस्न ?
देखा होगा कभी पज़मुर्दा[6] फूल।

किसी सूरत बदलना चाहता हू,
जहाँ के साथ चलना चहता हू।
मिज़ाज-ए-दहर[7] पर काबू नहीं है,
मिज़ाज-ए-दिल बदलना चाहता हू।

मेरी खिलवत[8] मे कोई होता है इंकार नहीं,
है गुनाहगार-ए-मुहब्बत हूं ज़ियांकार[9] नहीं,
अपनी ही आग मे खामोश जला करता हू;
मेरे जलने के बज़ाहिर कोई आसार नहीं।

[illegible] २ [illegible]कारी ३. तोड़नेवाला ४ मिटनेवाली ५ [illegible] ६ [illegible] हुआ ७. दुनिया ८. तनहाई ९. बुरा काम करने वाला।

गम में मलबूस[1] वो नगमात[2] सुना सकता हूं,
मैं अगर चाहूं ज़माने को रुला सकता हूं।
अपने नालों[3] से अगर काम अमल का लूं 'हज़ी'
इन्हीं नालों से मुकद्दर भी बना सकता हूं।

मुझको उल्फत है तेज धारों से,
वास्ता कुछ नही सहारों से।
ले गया गर किनारों पे तूफान,
लौट आया हूं खुद किनारों से।

हुस्न पर जब शबाब[4] आता है,
साथ लेकर हिजाब[5] आता है।
तब तमन्नाएं दीद[6] की लेकर,
इश्क़-ए-खाना खराब[7] आता है।

लब पे जब तेरा नाम आया है,
अश्क[8] बहर-ए-सलाम[9] आया है।
अपने अश्कों पे नाज़[10] है मुझको,
बारहा[11] रोना काम आया है।

. ८। हुआ २. गीत ३. रोना ४. जवानी ५. परदा ६. देखना
. ८. आंसू ९. सलाम के लिए १०. गर्व ११. बार-बार।

मुहब्बत यास[1] बन के छा गयी है,
फ़िज़ा[2]-ए-ज़िन्दगी थर्रा गयी है।
रुलाया मुद्दतों बहर-ए-तलाफ़ी[3],
कभी लब पर हंसी गर आ गयी है।

आस बंधती है टूट जाने को,
जाम[4] मिलता है फूट जाने को।
ज़िन्दगी की सितम ज़रीफी[5] देख,
साथ मिलता है छूट जाने को।

ऐश-ओ-आराम में क्या रखा है?
साग़र-ओ-जाम[6] में क्या रखा है?
तशनगी[7] अपनी ग़नीमत है 'हज़ी',
मय-ए-गुलफ़ाम[8] में क्या रखा है?

होती है सुबह, रात भी ढल जाती है,
शाज़-ओ-नादिर[9] यह तबीयत भी बहल जाती है।
शाम पड़ते ही मैं घबराता हूं ए दोस्त,
शाम मेरी शब-ए फुर्क़त[10] में बदल जाती है।

---

१. मायूसी २. हवा ३. प्रायश्चित ४. प्याला ५. जुल्म ६. प्याला
७. प्यास ८. गुलाब की शराब ९. कभी-कभी १०. जुदाई की रात।

देश के प्यार में जलना सीखो,
आब-ए-शमशीर'[1] पे पलना सीखो।
ज़िन्दा रहना है अगर अहल-ए-वतन,
मौत की गोद में पलना सीखो।

गिर रहे हो तो संभलना सीखो,
शक्ल बिगड़े तो संवरना सीखो।
बख्शता कौन है बीमारों को,
फिर 'हज़ी' दौड़ के चलना सीखो।

दो शब्द

आदिकाल से नारी का रमणीय रूप पुरुष के लिए एक चिरन्तन रहस्य रहा है। समय की गति के साथ, समाज की प्रगति के साथ-साथ, इस रूप की रहस्यमयता घटी नही, बल्कि बढी है। पुरुष ने, चाहे जीवन के वह किसी स्तर और किसी अवस्था मे क्यो न हो, किसी न किसी रूप मे अपनी आकाक्षा, अपने विचार, अपने आदर्श इस एक रहस्यरूपा रमणी मे केन्द्रित किए ही है। ऐसा लगता है जैसे नारी के इस रूप से सम्बन्ध अथवा सम्पर्क स्थापित किए बिना जीवन अधूरा है। यही कारण है कि विश्व की समस्त ललित कलाओ मे नारी और पुरुष के ये सम्बन्ध उभरकर उठे हैं। अपनी कृति मे कलाकार किस हद तक अपनी प्रवृत्तियो व भावनाओ का उत्सादन कर पाया है इसी मे उसकी कलाकृति की सफलता आकी जाती रही है।

मनुष्य मूलतः पशु नही है। वह मानव है और मानवीयता ही उसके जीवन का लक्षण है। मानवीयता का अवसादित रूप कला के प्रागण मे प्रवेश नही पा सकता। उसके उत्सादन मे ही कला की सिद्धि व सार्थकता रही है।

नारी के रमणी रूप के प्रति विशेषतः पुरुष की क्रिया, प्रक्रिया व प्रतिक्रिया, उसके विविध सम्बन्धों अथवा सम्पर्कों से प्रभावित पुरुष का वेदन, संवेदन व प्रतिवेदन ही ग़ज़ल का प्रतिपादित विषय रहा है। हृदय की अपनी इन वास्तविक अनुभूतियो को कलाकार किस हद तक सीधा अपने श्रोताओ अथवा पाठको तक पहुँचा पाया है, इसी पर उसकी सफलता आश्रित है। कथ्य और कथन की सरलता, उनकी परस्पर

हम जिन्दगी से इतना कहां प्यार कर सके,
जितना के जिन्दगी को 'हज़ी' हम से प्यार है।

बड़े पुर-कैफ़[1] मज़र[2] थे, बहुत रंगी नज़ारे थे,
बहार-ए-ज़िन्दगी अपनी थी जब तक वो हमारे थे।

मुझे जीने के जब ही से सभी सामान हासिल हैं,
मेरी खुशियों में जिस दिन से तुम्हारे दर्द शामिल हैं।

ना गर तामीर[3] करते आशियां[4] क्यों बिजलियां गिरती?
न गर फस्ले बहार[5] आती तो क्यों दौरे ख़िज़ा[6] आता,

कदम कांपते हैं, गिरा जा रहा हूं,
मगर शौक देखो बढ़ा जा रहा हूं।

न खुद बर्बाद करते गर नशेमन[7] हम तो क्या करते ?
——— के रहम पर यूं छोड़ देते आशियां कब तक।

राह तेरी देखता हो जिस तरह से रात को,
उम्र भर क्या उस तरह मरने की राह देखा करें।

---

१. नशे से भरे २. दृश्य ३. बनाना ४. घोंसला ५. बसंत ६. पतझड़
७. घोंसला।

एक आलम[1] पर है तारी[2] आलम[3]-ए-दीवानगी[4],
कोई फ़रज़ाना[5] नही यां किसको दीवाना[6] कहें?

आज फिर दिल में वो ही बर्क़[7]-ए-कोहन[8] लहराई है,
और आंखों से तेरी याद के बादल बरसे।

तुम्हें तो याद क्या होगा मगर भूला नही हूं मैं,
तुम्हारी आंख में देखी थी अश्क़ों[9] की नमी मैंने।

उनसे मिलना तो हो नही सकता,
अब 'हज़ी' दिन रहे कि रात रहे।

खीच लाए हमारे अश्क़ उन्हें,
बहुत रोए थे इस खुशी के लिए।

आरज़ु-ए-अज़ल[10] नही ए 'हज़ी',
मैं तड़पता हूं ज़िन्दगी के लिए।

जिस घड़ी आती हुई अज़ल[11] टल जाएगी,
ज़िन्दगी की हर तवक़्क़ो[12] खाक़ में मिल जाएगी।

---

१. दुनिया २. छाया हुआ ३. हालत ४. पागलपन ५. होशियार ६. पागल ७. बिजली ८. पुरानी ९. आसू १०. मौत की इच्छा ११. मौत १२. उम्मीद।

हमराह दर्द-ओ-रंज का दरमा' लिये हुए,
आती है मौत ज़ीस्त' का सामा लिये हुए।

तेरा इश्क़ अब दिल तक कहा महदूद है ए दोस्त,
मुझे अब रूह' की पिन्हाइया' आवाज़ देती हैं।

महबूबा से खिताब

क्या ख्याल-ए-दिल-ए-नाशाद' भी कर लेती हो ?
वो तग़ाफ़ुल' वह सितम याद भी कर लेती हो ?
दिल की बस्ती कभी आबाद भी कर लेती हो ?
यानी तुम हमको कभी याद भी कर लेती हो ?
पूछता तुमसे मगर मुझसे बहुत दूर हो तुम।

याद आती हैं कभी मेरी परेशां रातें ?
आह ! वो तूल'-ए-शब'-ए-हिज्र' वो वीरां रातें ?
चोरी-चोरी की मुलाकात अधूरी बातें ?
सच बताओ तो तुम्हें याद भी है वो बातें ?
पूछता तुमसे मगर मुझसे बहुत दूर हो तुम।

मुझको मालूम था इक रोज़ चली जाओगी
और सूनी मेरी दुनिया को बना जाओगी।
सच कहो, मुझसे अलग चैन क्या तुम पाओगी ?
मैं दुखी दिल से पुकारूँगा तो क्या आओगी ?
पूछता तुमसे मगर मुझसे बहुत दूर हो तुम।

अश्क़-ए-ख़ूं मेरी आंखों में रवां[1] रहने दो,
डर रहा हूं ग़म-ए-फर्दा[2] से, मुझे रोने दो।
वह रहे हैं मेरे अरमान इन्हें वहने दो,
क्या यही प्रेम तुम्हारा है के ग़म सहने दो।
पूछता तुम से मगर मुझसे वहुत दूर हो तुम।

तोड़ दो तौक़[3]-ओ-सिलासिल[4] तुम्हें डर किसका है?
प्रेम की वाढ़ को रोके यह जिगर किसका है?
ख़ाना वर्वाद सही सोच मगर किसका है?
यह जो सूना पड़ा रहता है घर किसका है?
पूछता तुमसे मगर मुझसे वहुत दूर हो तुम।

□

एकात्मकता बल्कि एकरसता ही उसकी कला की कसौटी है।

उर्दू साहित्य मे गजल साहित्य कला का एक विशिष्ट रूप है जिसके एक-एक शेर मे जीवन का एक सत्य निहित होता है। आज-कल के युग मे तो गजल का रूप इस सीमा तक निखर आया है कि कही-कही तो उसमे सम्पूर्ण जीवन की झाकी से लेकर सम्पूर्ण समाज, बल्कि राष्ट्र की आकाक्षाओं, आशाओ, निराशाओं तक का भावभीना चित्रण हमे देखने को मिलता है। उर्दू साहित्यकारो के लिए यह गौरव की बात है कि उन्होंने गजल को इतने ऊचे स्तर पर पहुचा दिया।

श्री कामेश्वरदयाल जी, साहित्यिक उपनाम 'हज़ीं' की गजलों व कत्ओ का यह सकलन पाठको के सामने प्रस्तुत है। इस सग्रह की आलोचना अथवा समालोचना प्रस्तुत पंक्तियो का विषय नही की है। ये तो केवल प्रस्तावनात्मक ही समझी जानी चाहिए। इससे इतर अथवा अधिक प्रयास पाठकों के स्वय के मूल्याकन-अधिकार पर अतिक्रमण होगा जो न वाछित है, न वाछनीय है।

इस सकलन मे जितनी भी गजलें व कत्ए सग्रहीत किए गए हैं उनमे प्रत्येक से शायर की तीव्र अनुभूतियो का स्पष्ट आभास मिलता है। भाषा प्रवाहमयी है और सर्वत्र भावो के साथ एकरस होकर चली है। सम्प्रेषण मे सरलता के साथ सादगी है और यह एक बहुत बड़ी बात है। मालूम ऐसा देता है जैसे शायर को कोई उलझन नही है और न वह अपने कथन मे कही उलझा ही है। इससे पाठको का शायर के हृदय की गहराइयों तक पहुचना आसान हो गया है।

सम्पूर्ण सकलन को पढने के बाद पाठक के आगे, उसके मस्तिष्क-पट पर एक तसवीर उभरती हुई आती है और अनुभवशील व्यक्तित्व से उसे सम्पन्न बना अपनी छाप हमेशा के लिए उस पर उत्कीर्ण कर देती है। मानवीय सवेदनाओं की इस संपत्ति मे पाठक के लिए पीड़ा, हर्ष-उन्माद, सुख-दु ख, आशा-निराशा सब कुछ सुरक्षित है। अपनी इस कलाकृति के रूप मे 'हज़ीं' साहब अपने पाठको को यही उपहार देना चाहते हैं। यही उनकी साहित्यिक देन है।

इस सकलन मे प्राप्य निम्न उद्धरित अंश शेर और कत्ए मेरी दृष्टि

मे विशेष महत्त्व रखते हैं। यह इसलिए कि इनसे शायर के व्यक्तित्व को प्रकाश मिलता है। उन्हे परिचय के रूप मे देने के लोभ का संवरण मैं नही कर सकता :

इश्क की राहों से परवाना ही रहबर है 'हजो'
अपनी आखो से लगा लें खाके हर परवाना हम।

किसे मालूम था जाने मोहब्बत;
भुलाना भी पडेगा याद करके।
'हजो' इतना तआल्लुक़ रह गया है
कि रो लेते हैं उनको याद करके।

दिले सोजा, जिगर तपता, ग्रमे एहसासे तनहाई,
तुम्हारे इश्क़ की बाकी है इतनी यादगार अब भी।

शबे फ़ुर्क़त की बेबसी तौबा,
मौत आती न नींद आती है।

मुझे मत फ़रेबे निशात दे, न समझ कि मुझको पता नही,
दिखा कोई चश्म जो नम नही, बता कोई दिल जो दुखा नही।

तेरे किरदार की सब बरकतें है,
कहा रंगीन थे मेरे फ़साने।

जो मुस्त फैज उससे हुए हैं वे कुछ कहे,
मैं तो कहूगा आग लगा दी बहार ने।

खुम खानये हस्ती से ए 'हजो' हमको भी मिले सांगर लेकिन,
इस प्यास की शिद्दत क्या कहिए, अब भी हैं तश्नाकाम से हम।

उम्र सारी कट गई मौजो से हंसते-खेलते,
फिक्र साहिल क्या करूं हर मौज है साहिल मुझे।

तेरी नीची निगाहें जिनको उठना तक नही आता,
उन्ही को हमने देते मौत का पैग़ाम देखा है।

तुझ से छुपा के तुझको जो देखा तो शर्मसार हूं,
बारे गुनाहे चश्म से उठती नही नजर मेरी।

हर आख को देखा है पुरनम हर दिल को है पाया वाक़िफे ग़म,
इक ग़म ही हक़ीक़त है हमदम हस्ती की हक़ीकत कुछ भी नही।

मैं खीचता रहा वो छुड़ाता चला गया,
दामाने यार से भी सदा छेड़ सी रही।

फूल के खिलने का है गुंचे के मिटने पर मदार,
जिन्दगी ही जिन्दगी की मौत का पैगाम है।

नवाजिश हुई उनकी जब जब नसीब,
तभी मेरे पीछे जमाना पड़ा।

जश्न कैसा आशियाना बच गया गर बर्क से,
आस्मां क्या फिर कोई बिजली गिरा सकता नही।

हज़म करना है मुझे जहराबे ग़म,
इश्क़ को अमृत बनाना है मुझे।

जिनसे उम्मीद अमृत की थी ए 'हची',
वो मएतलखिए ग़म पिलाते रहे।

खुद अपने हाले परीशां पे आज हंसना पड़ा,
तरस रहे थे बहुत दिन से लब हंसी के लिए।

वो आंख क्या जो ग़ैर की खातिर न रो सके,
वो दिल ही क्या कि जिसमें ज़माने का ग़म नहीं।

अपना ज़मीर बेच के खुशियां खरीद लें,
ऐसे तो इस जहां के तलबगार हम नहीं।

उसमे ज़िक्रे खुशी नहीं लेकिन,
लोग खुश हैं मेरी कहानी से।

महफ़िले एशोतरब सोज़ से भर जायेगी,
दिलशिकिस्ता हूं मेरे हाथ में अब साज़ न दे।

और,

सोज़ भी साज़ भी मिलता है उसी दर से 'हज़ी',
बात क्या है वो तुझे सोज़ तो दे, साज़ न दे।

ग़रीके ग़म हो गर दुनिया तो ग़म दुनिया से उठ जाये,
यह दुनिया क्यों किसी के दर्द में शामिल नहीं होती।

वही मौजेरवां है जिनमें किश्ती ज़िन्दगानी की,
न रास आए तो तूफ़ां है जो रास आए तो साहिल है।

ग़म यही है कि तेरे ग़म के लिए,
असंये ज़िन्दगी बहुत कम है।

और,

उसके लब पर हंसी तो है लेकिन,
ज़िन्दगानी की आंख पुरनम है।

यू उनकी सब वफाओं पे पर्दे गिरा दिये,
जब से चला है जिक्रे जफा मुस्कुरा दिये।

और,

दामन मे तार है न गरीबां में कोई तार,
दस्ते जनू ने इश्क के कर्जे चुका दिये।

ये तो हुए 'हज़ी' साहब की ग़ज़लों के शेरों के कुछ नमूने। क्योंकि ग़ज़लों के साथ क़त्ए भी इस संकलन मे संग्रहीत है इसलिए उनकी तरफ पाठको का ध्यान आकर्षित किए बिना परिचय अधूरा रह जाएगा। लीजिए :

चाद तारो मे रोशनी सी नही
अब गुलों मे वो ताजगी सी नही
जब से दिल अपना बुझ गया है 'हज़ी'
हुस्न मे भी वह दिलकशी सी नही।

इससे इंकार कब है दुनिया मे
इशरतों की भी मय बरसती है
लेकिन ऐसे भी लोग हैं जिनकी
जिन्दगी मौत को तरसती है।

मैं तश्नाकाम तश्नादहन हू तो क्या हुआ
औरों की मैंने प्यास बुझाई है ऐ 'हज़ी'
गुमकरदए हयात हू लेकिन ये फख्र है
औरों को मैंने राह दिखाई है ऐ 'हज़ी'।

जिन्दगानी से प्यार क्या कीजे
जिन्दगानी तो कजअदा निकली,
साजे हस्ती को जब भी छेड़ा 'हज़ी'
ग़म मे डूबी हुई सदा निकली।

दिल-ए-हज़ीं

कामेश्वर दयाल 'हज़ीं'

क्यो हो बरगश्ता ये हयात 'हज़ी'
काम सारा ही करना बाकी है
ज़िन्दगी मे अभी किया क्या है
जीना बाकी है मरना बाकी है।

कद्रो कीमत बढ़ेगी बादे फना,
हम बकैदे हयात सस्ते हैं।
जीते-जी कद्र क्यो करे दुनिया
इसमे मुर्दा-परस्त जीते हैं।

मेरी मजबूरिया न पूछ 'हज़ी'
सोज को भी मै साज कहता हू
जिनमे बन्दो का भी नही औसाफ
उनको बन्दानवाज कहता हू।

अपनी प्रस्तुत पक्तियों के विस्तार-भय से मैने अनेक शेरो और कताओ को प्रिय होते हुए भी यहा छोड दिया है। इस प्रयास से मेरी केवल यही कामना रही है कि 'हज़ी' साहब के शायराना व्यक्तित्व की, उनकी उपलब्धियो की, उनके हृदय-तल की गहरी अनुभूतियो की, उनकी कल्पना के उच्च स्पर्श की कुछ अस्पष्ट रेखाएं मात्र खीच दू जिनसे पाठक सम्बन्धित कलाकार का अपना स्वतन्त्र चित्र स्वय बना सके। मै पहले ही यह स्पष्ट कर चुका हू कि पाठक के अपने स्वतन्त्र मूल्याकन के अधिकार-क्षेत्र मे मै प्रवेश करना नही चाहता।

पुरुष का नारी के प्रति, प्रेमी का प्रेमिका के प्रति सभाषण अथवा आलाप-संलाप उर्दू ग़ज़ल का परम्परागत विषय रहा है। 'हज़ी' साहब अपने काव्य मे इस परम्परा से दूर नही हुए है। अपनी कला से उन्होंने इन विविध क्रिया-प्रतिक्रियाओ को एक अलग विकास दिया है। प्रारम्भिक ग़ज़लो मे कथ्य परम्परागत होते हुए भी कथन मे एक अपनी स्वकीय शैली है, जिससे उनके समस्त शिल्प पर उनके अपने व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट

है। मालूम होता है कि यौवन-प्रवेश के साथ ही कलाकार को नारी के रमणी रूप ने अपनी ओर आकर्षित किया। उस रूप में आग थी और उस आग मे आच। वसन्त भरा यौवन एक परवाने की तरह प्रकाश देखकर उस आग की ओर अग्रसर हो गया। सम्पर्क हुआ और प्रथम सम्पर्क मे ही झुलसकर चीख उठा। ये चीखें शायर के निम्न मिसरों मे अवतरित हुई—भुलाना भी पड़ेगा याद करके; कि रो लेते हैं उनको याद करके; मौत आती है न नींद आती है; मैं तो कहूंगा आग लगा दी बहार ने; उन्हीं को देते मौत का पैग़ाम देखा है, आदि-आदि।

परन्तु शायर की अनुभूति उस आग की झुलस तक ही सीमित नही रह जाती। शनैः-शनैः उसे एहसास होता है कि नारी में केवल आच ही नही है, अमृत भी है। साथ ही वह अपनी पीड़ा को समस्त प्राणियो की पीडा मे परिवर्तित हुआ पाता है और पुकार उठता है :

> वो आख क्या जो गैर की खातिर न रो सके,
> वो दिल ही क्या कि जिसमे ज़माने का गम नही।

> उसमे जिक्र खुशी नही लेकिन,
> लोग खुश हैं मेरी कहानी से।

समय के बीतने के साथ पीड़ा पीड़ा नही रह जाती, दर्द केवल दर्द ही नही रह जाता। पुकार और चीख की वाणी संगीत के स्वरों मे परिवर्तित हो जाती है और एक विश्वास के साथ संगीतमय साहित्य का निर्माण होता चला जाता है। संक्षेप मे उदाहरणार्थ :

> हज्म करना है मुझे जहराबे ग़म,
> इश्क़ को अमृत बनाना है मुझे।

> उम्र सारी कट गई मौजों मे हंसते-खेलते,
> फ़िक्रे साहिल क्या करूं हर मौज है साहिल मुझे।

[illegible]
फिर एक दिन [illegible] उत्पन्न होती है।

तब शायद एहसास होता है कि वह जो अब तक दुःखता हुआ होने के कारण चीख-पुकार ही कर रहा था, केवल मरहम-पट्टी के लिए ही अपने मसीहा से माँग कर रहा था। उसे एहसास होता है कि शायरी केवल ज़ख्म नहीं, अमृत भी है। जहाँ से शायर के अन्तस्तल की थाह नहीं ली जा सकती। और इस एहसास की प्राप्ति जब मिलती है तब शायर कहता है कि :

गोश भी गाश भी मिलता है उसी दर से 'हुडी'
और भी ऐसे किरदार की सब बरकतें हैं,

कहाँ रंगीन थे मेरे फसाने

उनके लब पर हँसी तो है लेकिन,
जिन्दगानी की आँख पुरनम है।

उम्र के साथ जीवन में उथल-पुथल कम होती जाती है। एक प्रबुद्ध पुरुष की अनुभूति अवतरित होती है और शायर का जीवन भावुकता के जीवन से चिन्तन के जीवन में प्रवेश कर जाता है। अब उसके काव्य में

प्रस्तावना

शोअराए बीकानेर मे जिन शायरो की शायरी को कुबूले खासो आम का दर्जा हासिल है और जिनके नाम और मकाम तारीखे शेरो सुखन मे कायम और महफूज रहेंगे, उनमे जनाबे 'हज़ी' का जिक्र बडे वसूक और एतमाद से किया जा सकता है। बशर्ते कि मर्वरिखीन सूबाई तास्सुब व तग नजरी से मुबर्रा रहे और सही और बेलाग तारीख अदबे उर्दू मुरत्तिब हो। 'हज़ी' साहब के कलाम की मकबूलियत का यह आलम है कि 'मीर' की जबान मे 'परागन्दा तबा' लोग या बजबाने मौलाना 'रूम' इश्के 'खुश सौदा' के दिलदादा व वारफ्ता अपनी-अपनी नशिस्तो और महफिलो मे आहे भर-भरकर दोहराते हैं। बजाहे वही दर्दे मुहब्बत कि करिश्मा साजी, हुस्ने फितनासामा की जादूगरी-दरमल 'हज़ी' की शायरी निगाहो के तसादुम मे ही नही, दिलो के टकराव से पैदा हुई है। 'हज़ी' ने इश्क किया है और बरमला किया है जिस पर उन्हे न रियाकाराना अफसोस है, न गुनहगाराना नदामत, बल्कि हुस्नो इश्क की दुनिया मे उन्होंने अपने आप को खोकर जो कुछ पाया है वह जिन्दगी के नूरो जुल्मात तलखो शीरी हकायक और हुस्ने मासूम के कातिलाना अन्दाज का राज है। जिसे वे इन्तिहाये खुलूस और दर्द भरे शेरी नगमात मे ढालकर फज़ा मे बिखेरते रहते हैं। अपनी पुरदर्द सुरीली आवाज मे जब वह मुदरजा जैल अशआर सुनाते है तो पत्थर से पत्थर दिल पिघलते और बेतौफीक मे बेतौफीक लोग आह और वाह करते नजर आते हैं।

> सुनूए सुब्हा देखा है गुरबे शाम देखा है,
> किया है इश्क हमने इश्क का अन्जाम देखा है।

मिली नज़रें भी देखी हैं फिरी नज़रें भी देखी हैं,
दिखाया जो भी तूने गर्दिशे अइयाम देखा है।

तेरी नीची निगाहें जिनको उठना तक नहीं आता,
उन्ही को हमने देते मौत का पैग़ाम देखा है।

यहां तो नीची नज़रो के न उठते हुए मौत का पैग़ाम देने का ज़िक्र है लेकिन 'हुज़ी' चूंकि हुस्न के हर पहलू के रम्ज़ आशना रहे हैं उन्होंने इस शेर में कतई फ़ैसला दिया है जो सुनने के काबिल है :

वफ़ा हो, या जफ़ा हो, ग़ैज़ हो इकराम हो उसके,
सभी परखे हुए है उसके सब अन्दाज़ कातिल हैं।

यहां यह सवाल पैदा होता है कि शायर ने इश्क किया, उसका अंजाम देखा, मिली नज़रें देखी, फिरी नज़रो का मुशाहदा किया, वफ़ा, जफ़ा, ग़ैज़, इकराम सबको परखा और कातिल तसलीम किया तो फिर ये शकवे क्यो ?

यह कैसा रोग लगाया था जिन्दगी के लिए,
तमाम उम्र रहे नाला-कश किसी के लिए।

जीना दुश्वार रहा मरना भी आसां न हुआ,
ज़िन्दगी-मौत का मुझ पर कोई अहसां न हुआ।

खाक मे मिलते रहे, चश्मे-वफ़ा के गौहर,
मेरे अश्को के लिए आपका दामा न हुआ।

उनसे मिलने को 'हुज़ी' जान तडपती ही रही,
आखिरी वक़्त भी पूरा मेरा अरमा न हुआ।

तड़प उठता हूं उनको याद करके,
गये हैं जो मुझे बरबाद करके।

किसे मालूम था जाने मुहब्बत,
भुलाना भी पड़ेगा याद करके।

मिले गर फिर कभी तो पूछ लूगा,
कि खुश तो हो मुझे बरबाद करके।

'हज़ी' इतना ताल्लुक रह गया है,
कि रो लेते हैं उनको याद करके।

हमारे दम ने मोहब्बत को जिन्दगी बख्शी,
हमी तरसते हैं उल्फत में जिन्दगी के लिए।

खुद अपने हाले परीशां पे आज हंसना पड़ा,
तरस रहे थे बहुत दिन से लब हंसी के लिए।

ये अशआर बज़ुबाने हाल पुकार-पुकारकर कह रहे हैं कि 'हज़ी' का दिल बावजूद महबूब के विसाल व लुत्फो करम, रंजो गमे-इश्क में दुखा है, और बुरी तरह दुखा है। उसे चोट पहुंची है, और ऐसी गहरी कि दिल से गुज़रकर रूह की अथाह गहराइयों तक अपना काम कर गई है। उसका लाज़मी नतीजा यही निकलना था कि उसका दिल गमो अन्दोह और दर्दो इज्तराब की आमाजगाह बन गया और यही उनकी शायरी का मिज़ाज बन गए।

मुलाहज़ा कीजिए ये अशआर :

तुम्हारी याद में रहता है कोई बेकरार अब भी,
चले आओ किसी को है तुम्हारा इन्तज़ार अब भी।

मिली नज़रें भी देखी हैं फिरी नज़रें भी देखी हैं,
दिखाया जो भी तूने गर्दिशे अइयाम देखा है।

तेरी नीची निगाहे जिनको उठना तक नही आता,
उन्ही को हमने देते मौत का पैगाम देखा है।

यहा तो नीची नज़रो के न उठते हुए मौत का पैगाम देने का ज़िक्र है लेकिन 'हज़ी' चूकि हुस्न के हर पहलू के रम्ज़ आश्ना रहे हैं उन्होंने इस शेर मे कतई फैसला दिया है जो सुनने के काबिल है :

वफ़ा हो, या जफ़ा हो, ग़ैज़ हो इकराम हो उसके,
सभी परखे हुए हैं उसके सब अन्दाज़ कातिल हैं।

यहा यह सवाल पैदा होता है कि शायर ने इश्क किया, उसका अंजाम देखा, मिली नज़रें देखी, फिरी नज़रो का मुशाहदा किया; वफा, जफ़ा, ग़ैज़, इकराम सबको परखा और कातिल तसलीम किया तो फिर ये शकवे क्यों ?

यह कैसा रोग लगाया था ज़िन्दगी के लिए,
तमाम उम्र रहे नाला-कश किसी के लिए।

जीना दुश्वार रहा मरना भी आसां न हुआ,
ज़िन्दगी-मौत का मुझ पर कोई अहसां न हुआ।

खाक में मिलते [illegible] [illegible]े-वफ़ा के गौहर,
मेरे [illegible] न हुआ।

[illegible] ही रही,
[illegible] न हुआ।

तड़प उठता हू उनकी याद करके,
गये हैं जो मुझे बरबाद करके।

किसे मालूम था जाने मुहब्बत,
भुलाना भी पडेगा याद करके।

मिले गर फिर कभी तो पूछ लूगा,
कि खुश तो हो मुझे बरबाद करके।

'हज़ी' इतना ताल्लुक रह गया है,
कि रो लेते हैं उनको याद करके।

हमारे दम ने मोहब्बत को जिन्दगी बख्शी,
हमी तरसते है उल्फत मे जिन्दगी के लिए।

खुद अपने हाले परीशा पे आज हसना पडा,
तरस रहे थे बहुत दिन से लब हसी के लिए।

ये अशआर बज़ुबाने हाल पुकार-पुकारकर कह रहे हैं कि 'हज़ी' का दिल बावजूद महबूब के विसाल व लुत्फो करम, रजो गमे-इश्क मे दुखा है, और बुरी तरह दुखा है। उसे चोट पहुची है, और ऐसी गहरी कि दिल से गुज़रकर रूह की अथाह गहराइयो तक अपना काम कर गई है। उसका लाज़मी नतीजा यही निकलना था कि उसका दिल गमो अन्दोह और दर्दो इज़तराब की आमाजगाह बन गया और यही उनकी शायरी का मिज़ाज बन गए।

मुलाहज़ा कीजिए ये अशआर :

तुम्हारी याद मे रहता है कोई बेकरार अब भी,
चले आओ किसी को है तुम्हारा इन्तज़ार अब भी।

वो अगली सी मोहब्बत में नही वारफ्तगी लेकिन,
हम अपने हाल पर रो लेते हैं दीवाना-वार अब भी।

अगर दो चार जख्मे दिल किसी ने सी दिए तो क्या,
जिगर छलनी है अब तक और सीना है फिगार अब भी।

दिले सोजा जिगर तफ़्ता गमे अहसासे तन्हाई,
तुम्हारे इश्क की बाकी है इतनी यादगार अब भी।

अपने कब्जे मे बस दौलते अश्क थी,
उनपे अश्कों के गौहर लुटाते रहे।

जिनसे उम्मीद अमृत की थी ए 'हज़ी',
वो मये तलखिये गम पिलाते रहे।

नही महदूद दिल ही तक खराबी,
जिगर का खून भी होने लगा है।

दर्द सहना गम उठाना रात दिन का काम है,
आप क्यो तकलीफ फरमायें मुझे आराम है।
इश्क का अन्जाम ग़म है और उस पर ये सितम,
इब्तदा-ता इन्तिहा अन्जाम ही अन्जाम है।

जिन्हे लिखना पड़ा है खूने दिल खूने तमन्ना से,
किताबे जिन्दगी मे ऐसे अफ़साने भी शामिल हैं।

खुशी भी जाने क्यों वजहे सुकूने दिल नहीं होती,
किसी सूरत भी क्यो दिल को खुशी हासिल नहीं होती।

इश्क का सोज़ो गम मेरा इश्क की रह गुज़र मेरी,
राह मेरी है पुरख़तर, मौत है हमसफ़र मेरी।

शामो शहर मे किसलिए फ़ितरत को इम्तियाज़ है,
मेरे लिए तो एक है शाम मेरी सहर मेरी।

वो न आए कभी जिनके ऐज़ाज़ में,
O रोज़ बज़्मे ख़याली सजाते रहे।

आख़िर वो एक शोलए जासोज़ बन गई,
जो आग दिल की मुद्दतों दिल में दबी रही।
दुनिया ने मेरा चाके गरीबा न सी दिया,
रुसवाई का तमाशा खड़ी देखती रही।

इन अश्आर की बेपनाह दर्द अगेज़ी और तासीर बला की बेसाख्तगी सादगी व रवानी और लामुतनाही जज्बए ख़ुलूस से कौन इन्कार कर सकता है? बज़ुबाने 'शैले' ये वह शीरीतरीन नग्मे हैं जो शायर के दिल के टूटे हुए तारो की झनकार से पैदा हुए हैं। ये हर उस दिल के शदीदतरीन ग़म के तरजुमान है जिसको क़ुदरत ने दर्दे दिल की दौलत से नवाज़ा है।

मगर हिज्रो-महरूमी के इन दर्दभरे मोज़ोनालो और वियोग के जासोज रूहफ़रसा लेन-देन के बाद भी 'हज़ी' साहब को ये क्या सितम ज़रीफ़ी है :

कुछ और मेरे इश्क की जोलानिया बढ़ें,
कुछ और तेरे हुस्न को ताबिन्दगी मिले।

तड़पाए लाख मुझको दुआ है मगर यही,
उनको ख़ुदाई और मुझे बन्दगी मिले।
तेरे मुकाबले में ये दुनिया तो चीज़ क्या,
ठुकरा दू ज़िन्दगी को अगर ज़िन्दगी मिले।

ताजा सितम भी कोई बराहे करम नही,
क्या अब तेरी जफाओ के लायक भी हम नही।

कोई तो बात हो मैं कहूं जिसको इल्तफात,
तेरा सितम नही कोई तेरा करम नही।

यही चश्मो चरागे आशिकी हैं,
तू दिल के दाग क्यो धोने लगा है।

ये सब तूफां उठा रखे है दिल ने,
तुम्हारी दोस्ती तो बेजरर है।

उसे अहसासे गम होने लगा है,
मेरी हालत पे अब रोने लगा है।

'हज़ी' तुमको है आरजूए अजल,
वो जीने के अरमान क्या हो गए।

ओ भूल जाने वाले लुत्फो करम को अपने,
लुत्फो करम को तेरे मैं याद कर रहा हूं।

तेरे किरदार की सब बरकतें हैं,
कहा रगीन थे मेरे फसाने।

तुलूए सुब्ह, गुरुबे शाम, इबतिदाए इश्क और इश्क के अन्जाम तक पहुंचने और महबूब के लुत्फे ऐशोविसाल और कहरे हिज्रो जुदाई सभी अन्दाज को परखकर क़ातिल ठहराने के बाद ये अजसरे नौ अपने इश्क की जौलानिया बढ़ते और हुस्न को ताबिन्दगी मिलने की तमन्नाएं दिल को सब तूफान उठा रखने का मुल्जिम ठहराना, माशूक की दोस्ती पर

बेजरर होने का हुक्म लगाना, उसके दिल मे एहसासे ग़म पैदा होने और अपनी हालत पर रोने की खुशफहमी पैदा करना, अपने मायूस टूटे हुए दिल को ये ताजियाने देकर 'वो जीने के अरमान क्या हो गए' फिर से जिन्दगी के लिए उभरना, अपने फसानो की रगीनी को हुस्न के किरदार की बरकतें उसके दिए हुए दागहाय दिल को चश्मो चरागे आशिकी कहना, एक तरफ तो शायर के दिल मे नई तमन्नाए जाग उठने की गम्माज़ी करता है, उसके किरदार की मजबूती, इश्क की राहे पुरखतर और दुश्वारगुज़ार मे उसके अज़्म होसले और साबितकदमी का पता देता है तो दूसरी तरफ खयालात के इज्तमाए-ज़िद्दैन की यह सूरते हाल अहले ख़िरद के खिलखिलाकर हसने का नही तो ज़ेरे लब मुस्करा देने का बाइस जरूर हो सकता है लेकिन ख़िरद वालो को अहले जूनू का यह राज़ क्या मालूम कि अपनी हस्ती सोज़ो गुदाज़े इश्क मे मिसाले शम्मा घुला देने के बावजूद उन्हे ग़मे इश्क इतना अजीज़ और प्यारा क्यो है ? हकीकत मे इन सवालो का जवाब सिर्फ एक है वो यह कि पत्थर पत्थर मे टकराकर जो चिंगारिया पैदा करते हैं वो हवा मे उड जाती है लेकिन दिलो मे लगी हुई आग उम्र भर सुलगती और भड़कती रहती है और किसी तरह बुझाए नही बुझती । अश्क बहाए या नाले करे या आहे भरे ! इश्क जिसको हकीकत मे इश्क कहते हैं, इमान की रगो पै व जानो रूह मे पैवस्त होकर अबद तक उसका पीछा नही छोडता । यही मामला जनाबे हज़ी के साथ है । उन्हे ग़मे इश्क की आज़मत गहराई और गीराई और आफाकियत का जितना शदीद अहसास और जिस कदर गलबे के साथ इरफान हासिल हुआ है उसको मुन्दरजा जैल अश्आर ने जिस भरपूर शेरियत और तासीर के साथ जाहिर किया है, अहले दिल के लिए खासे की चीज़ है ।

जानता है वही जो महरम है,
जिन्दगी इक इबादते गम है ।
कौन मुनकिर है लज्जते गम का,
किसको दरकार चारए-ग़म है ।

ग़म यही है कि तेरे ग़म के लिए,
अरसए ज़िन्दगी बहुत कम है।

दिल का आईना मुकद्दर फिर कभी होता नही,
जब गमो की आच मे तपकर निखर जाता है दिल।

दर्द देना हुस्न का शेवा 'हज़ी',
दर्द सहना इश्क का ईमान है।

गम अगर है ज़िन्दगी है शादकाम,
गम नही तो ज़िन्दगी नाकाम है।

क्या फ़िक्र है शामे-हिज्र सही काटेंगे बड़े आराम से हम,
हम उनके हैं गम उनका है घबराएं क्यो आलाम से हम।

यही वजह है कि 'हज़ी' बावजूद आलामो-मसायब ज़िन्दगी से फरा
इख्तियार करने के बजाय उसे प्यार करते हैं और उसके आखें चुराने प
भी उससे नज़र मिलाते है, उसकी नवाज़िश न होते भी उसके राग गाते
हैं।

ज़िन्दगी हमसे आखें चुराती रही,
ज़िन्दगी से हम आखें मिलाते रहे।
ज़िन्दगी ने नवाज़ा न हमको मगर,
ज़िन्दगानी के नगमात गाते रहे।

कलामे 'हज़ी' का बगायर मुतालिया यह हकीकत वाज़ह करता है
कि 'हज़ी' ने बड़े नज़मो ज़ब्त और ग़ौरो फ़िक्र से शायरी की है। उनके
यहा जहा जज़बात का तूफान और सैलाब है, वहा एक ठहरे हुए शान्त
... का सुकून भी मिलता है। उन्होंने जो कुछ कहा है वक्ती जोश,

जिन्सी उबाल और उफ़ान के फ़रोमाया तक़ाज़ों के तहत नहीं कहा है। उनकी शायरी किसी जज़्बए के आवेग की तफ़सील नहीं है। वो हवस की उस ऐयारी से खबरदार चौकन्ने रहे हैं जो दिल की सरमदी व अबदी लय में मिलकर इन्सान को धोखा देती रहती है। इश्क़ के जज़्बाते-आलिया ने उनका पाकीज़ा शऊरो-फ़िक्र जज़्ब हुआ है, जज़्ब होकर निखरा है, निखरकर उभरा है और यह ऐलान करता है :

> हवस भी कूबे में दिल के सदाएं देती रहती है,
> हर इक आवाज़ ओ नादां सदाए दिल नहीं होती।
> गुज़र जा वस्ल की सरहद से कतराकर ओ दीवाने,
> वो मिलते हैं जहां, वो इश्क़ की मंज़िल नहीं होती।

यहां फिर अक़्ल वाले यही कहेंगे कि वस्ल के सिवा इश्क़ का मक़सद ही क्या है? इससे कतराकर गुज़रना क्या मानी लेकिन देखिए 'हज़ी' अक़्ल के लिए क्या फ़रमाते हैं :

> अक़्ल का वास्ता जुनूं से क्या?
> क्यों जुनूं की हंसी उड़ाती है।
>
> अक़्ल और इश्क़ के दोराहे पर,
> ज़िन्दगी पेचो-ताब खाती है।

> अक़्ल रहबर बन नहीं सकती कभी दिल की 'हज़ी',
> जब खिरद से काम लेता हूं भटक जाता है दिल।

> यह माना होश ज़रूरी है ज़िन्दगी के लिए,
> मगर यह होश ही दुश्मन है आग ही के लिए।

मताए इश्क़ का तेरी 'हज़ी' ख़ुदा हाफ़िज़,
कि साथ अक़्ल का रहज़न है रहबरी के लिए।

जनाबे 'हज़ी' को इस बात का पूरा यक़ीन है कि इश्क़ में अक़्ल का दख़ल नहीं, इश्क़ की राहों में वो ही रहबरी कर सकता है जो इस राह का राही हो। यह बात इस शेर में कैसे हुस्ने-तमसील से समझाई है:

इश्क़ की राहों में परवाना ही रहबर है 'हज़ी',
अपनी आँखों से लगा लें ख़ाके-हर परवाना हम।

यहां तक ग़मे जाना का ज़िक्र हुआ और बड़ी तफ़सील से हुआ, हमें अहसास है कि फ़न-बराए-ज़िन्दगी के तालिब ये सब कुछ पढ़ते वक़्त बार-बार सोच रहे होंगे, ग़मे-दौरां और ग़मे-इन्सां कहां गए। दुनिया में आज-कल जो कुछ हो रहा है और जिन नज़रियात के तहत हो रहा है उसका शायर ने कहां तक असर लिया। अगर अदब-बराए-अदब के तरफ़दारों के दलायल इख़्तियार किए जाएं, तब तो कहा जा सकता है और अज़ीम फ़न-कारों के अक़वाल के सहारे कहा जा सकता है कि शेर और फ़न का हासिल सिर्फ़ शेर और फ़न ही हैं। उन्हें किसी ग़ैरशायराना या ग़ैरफ़नकाराना मक़सद के हुसूल या नज़रिए की इशाअत के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। मक़सद की अदम इफ़ादियत पर बहस हो सकती है, एक नज़रिए के ख़िलाफ़ दूसरा नज़रिया सही साबित किया जा सकता है। इस लिहाज़ से एक मक़सद और नज़रिए के तहत की गई शायरी और पैदा किया हुआ फ़न दूसरे मक़ासिद और नज़रियात रखने वाले अदीबों और नाज़रीन की नज़र में बावजूद अपनी तमाम फ़नकाराना ख़ूबियों के फ़िज़ूल और बेकार ठहराए जा सकते हैं। लेकिन इफ़रात व तफ़रीत से क़तए-नज़र हम अदब बराए-अदब और अदब-बराए-ज़िन्दगी दोनों के क़ायल हैं और हमारी राय में हज़ी चूंकि इश्क़ की हमागीरी और आफ़ाक़ियत के सामने सरे नियाज़ ख़म किए हुए हैं उनकी शायरी ग़मे-दौरां और ग़मे-इन्सां से ख़ाली नहीं। निज़ामे जहां की अबतरी पर उनका दिल बेचैन है:

मदहोश कोई है कोई महरूम जाम से,
दिल मुतमइन नही है जहा के निजाम से।

अदम मसावात पर बडे हौसले से कहते है -

यह मसलहत सही कोई इन्साफ तो नही,
बुलबुल को नाला और गुलो को हसी मिले।

'मसलहत सही' का फिक्रा कहा-कहा मार कर रहा है रम्ज़-शनास ही समझ सकते है। यह शायर के रम्ज़ो-किनाया का अहसास है। अहले हुक्म पीकर भी तश्नाकाम रहते है उनको सवालिया पैराए मे अन्जान बनकर जो हदफे मलामत बनाया है नश्तर ज़नी मे क्या कम है :

यह कैसी तशनगी है जहा मे जो हो चुके,
वो भी तो आ रहे है नजर तश्नाकाम मे ?

(ग़मे रोज़गार) पर जिस शिद्दत से मातम किया गया है, महसूस फ़रमाइए।

तेरा तो सिर्फ दिल की तबाही मे हाथ था,
तुझसे भी खो दिया है ग़मे रोज़गार ने।

ख़िज़ा की बरबादिया और तबाहकारिया सुनते और देखते चले आए थे। बहारो के मज़ालिम देखिए और सर पीटिये :

बहारो के लालच मे आकर 'हज़ो',
कफस को नशेमन बनाना पडा।

धज्जियां मेरे दामन की उड़ती रही,
लोग जश्ने-बहारां मनाते रहे।

गुलों का जिक्र क्या कलियां झुलसा दी,
बहारो मे चली वो भी हवाएं।

गुलशन मे कुछ नही खसो-खाशाक के सिवा,
सुनते है गुल खिलाए थे फ़स्ले बहार ने।

जो मुस्तफीज उससे हुए हैं वो कुछ कहें,
मैं तो कहूंगा आग लगा दी बहार ने।

हैं ज़द मे वर्क़ की हर शाख हर शजर नादां,
जो बच सके वो नशेमन कहां बनाएगा।

कैसी बहार दामने अब्रे बहार से,
वो बिजलियां गिरी के चमन तक जला दिए।

'हज़ी' दुनिया में दीनी निज़ाम की उन बन्दिशो से भी बेज़ार हैं जहा मजहबो मिल्लत की बिना पर इन्सान इन्सान से नफ़रत करता है। कहते है :

काबे मे और दहर मे मिल्लत की कैद है,
मैं तश्ना काम लौटा हू दोनो मकाम से।
इस लिहाज से उन्हे मैक़दे की फ़जा पसन्द हो नही,
दूसरों को भी उस तरफ दबाव देते हैं।
कुछ इम्तियाजे रग की मिल्लत की कैद है,
ये मैकदा है आइए देरो हरम नही।

दूसरे मिसरे में 'हज़ी' चकमा दे गए हैं और फ़रीं मेज़बान बन गए है। हम मेहमानों को आगाह किए देते हैं कि वो धोखे में आकर मैकदे में चले न जाएं, 'हज़ी' साहब उन्हें वहां हरगिज़ नहीं मिलेंगे।

खुदा पर 'हज़ी' साहब के ईमान और नाज़ का आलम देखिए

मुझको तो उसकी शाने करीमी पे नाज़ है,
सजदे करें वो जिनको दर्जे करम नहीं।

दुनिया में तहज़ीबे इन्सानी के मुसलसल इरतक़ा के बावजूद तंग नज़री व तास्सुब की जो फ़सीलें इन्सान को इन्सान से दूर करती हैं और नस्ले आदम में दुखों और ग़मों का जो हाहाकार मचा हुआ है उससे मुतास्सिर शायर का ज़हनी व रूही इन्तशार इन शेरों में महसूस कीजिए:

दीवारें क्यों बलन्द हैं ये ऊंच-नीच की,
क्या हर्ज आदमी से अगर आदमी मिले।

मनाज़िल सैंकडों तय कर चुकी तहज़ीबे इन्सानी,
मगर है नस्ले आदम की वही चीख़ो पुकार अब भी।

अपना ज़मीर बेच के ख़ुशियां ख़रीद ले,
ऐसे तो इस जहां के तलबगार हम नहीं।

शरीके ग़म हो गर दुनिया तो ग़म दुनिया से उठ जाए,
ये दुनिया क्यों किसी के दर्द में शामिल नहीं होती।

आख़िर में हम 'हज़ी' साहब की उस ग़ज़ल पर मज़मून का इख़्तताम करते हैं जिसमें इन्सान की हक़ीक़त अज़मत उसकी 'अना' दुनिया की मुश्किलों, मजबूरियों और ज़हनी अक़ायद की मुकम्मल तर्जुमानी है।

अजल से आज तक परचमे हदीसे दिल्बिहां मैं हूं,
फसाना दर फसाना दास्तां दर दास्तां मैं हूं।
कभी है फिक्र दुनिया की कभी है फिक्र उक़बा की,
हू मुकारे अमल लेकिन असीरे दो जहा मैं हू।

हजारो राज फितरत के किए हैं मुनकशिफ मैंने,
कभी गुल आऊंगा मैं भी अभी राजे निहा मैं हू।
बहुत ऊंचा मैं उठ सकता हू खाको बादे आलम से,
अभी तक तो मगर महवे ग़मे सूदो जियां मैं हू।
रसाई जीते जी उस तक किसी सूरत नही मुमकिन,
तमन्नाई है दिल लेकिन फसीले दर्मियां मैं हू।
मेरा जौके परिस्तिश क्या रहा मोहताजे यक मिल्लत,
जहां के बुतकदे मेरे हरम का पासबा मैं हू।
अगर सिमटू तो मुश्ते खाक से जियादा नही हू मैं,
अगर फैलू 'हुजो' तो फिर जमीनो आसमा मैं हू।

राजभवन
लखनऊ

—मुहम्मद उस्मान 'आरिफ
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

आ, कि कुछ तो कर लें तस्कीने[1] दिले दीवाना हम,
आ, कि थोडा-सा सुना दें हिज्र[2] का अफसाना[3] हम।

मैकदा[4] वीरान हो जायेगा गर हम उठ गये,
क्या समझता है हमें हैं जीनते[5] मैखाना हम।

नाखुदा[6] जिन को मयस्सर थे किनारे जा लगे,
और देखा ही किये साहिल[7] को मायूसाना हम।

परतवे हुस्ने अज़ल[8] या फिर शुआए[9] बर्के तूर,
और क्या समझें तुझे ऐ जल्वए जानाना[10] हम।

गर्दिशे दौरां[11] की तल्खी[12] भी गवारा हो गई,
है बहुत ममनून[13] तेरे गर्दिशे पैमाना हम।

इश्क की राहों मे परवाना ही रहबर है 'हज़ी',
अपनी आखों से लगा लें ख़ाके[14] हर परवाना हम।

तड़प उठता हूं उन को याद करके,
गये हैं जो मुझे बरबाद करके।

तेरे क्या हाथ आता है सितमगर,
किसी की जिन्दगी बरबाद करके।

किसे मालूम था जाने मुहब्बत,
भुलाना भी पड़ेगा याद करके।

वो नादिम हैं वफ़ा है न जफ़ा है,
सितम ही कर दिया फरियाद करके।

नही जीना भी मेरा जिस को मंजूर,
मैं जीता हूं उसी को याद करके।

मिले गर फिर कभी तो पूछ लूंगा,
कि खुश तो हो मुझे बरबाद करके ?

'हज़ी' इतना तअल्लुक रह गया है,
कि रो लेते हैं उनको याद करके।

तुम्हारी याद में रहता है कोई बेकरार अब भी,
चले आओ किसी को है तुम्हारा इन्तज़ार अब भी।

मनाज़िल सैकड़ों तय कर चुकी तहज़ीबे इन्सानी[1],
मगर है नस्ले आदम[2] की वही चीख़ ओ पुकार अब भी।

अज़ल[3] के रोज़ मैंने जिस को पहलू में जगह दी थी,
खटकता है मेरे सीने में रह रह कर वो ख़ार[4] अब भी।

वो अगली सी मोहब्बत में नहीं वारफ़्तगी[5] लेकिन,
हम अपने हाल पर रो लेते हैं दीवानावार अब भी।

अगर दो-चार ज़ख्मे दिल किसी ने सी दिये तो क्या ?
जिगर छलनी है अब तक और सीना है फ़िगार[6] अब भी।

दिले सोज़ा, जिगर[7] तपता, ग़मे एहसासे तनहाई,
तुम्हारे इश्क की बाकी है इतनी यादगार अब भी।

यह दुनिया है यहां मिलना, बिछुडना हो ही जाता है,
'हजो' क्यों आपके दिल पर वही ग़म है सवार अब भी।

---

१. मानवीय सभ्यता २. मानव जाति ३. संसार रचना का प्रथम दिवस ४. काटा ५. दीवानगी ६. घायल ७. जला हुआ।

जब कभी तेरी याद आती है,
मुझ को पहरों रुला के जाती है।

अक़्ल और इश्क़ के दोराहे पर,
ज़िन्दगी पेचोताब[1] खाती है।

मेरे लम्हाते कशमकश[2] की भी,
क्या कभी तुझको याद आती है ?

रंज हो या खुशी हो जो भी हो,
ज़िन्दगी है कि कटती जाती है ?

अक़्ल का वास्ता जुनूं[3] से क्या,
क्यों जुनूं की हंसी उड़ाती है।

शबे फ़ुर्क़त[4] की बेबसी तौबा,
मौत आती न नींद आती है।

---

१. असमंजस २. अन्तर्द्वन्द्व के क्षण ३. प्रेम का पागलपन ४. वियोग-रात्रि

हुआ जब से तुम से जुदा हूं मैं मुझे होश कुछ भी रहा नहीं,
तुम्हे क्या बताऊ कहां हूं मैं मुझे खुद भी अपना पता नही ।

मुझे रोना गर है तो बख्त[1] का मुझे उनसे कोई गिला नही,
उन्हे आप जिस का यकीन था हुआ वह भी वादा वफा नही ।

मुझे मत फरेबे निशात[2] दे न समझ कि मुझ को पता नही,
दिखा कोई चश्म जो नम नही बता कोई दिल जो दुखा नही ।

यू ही बात लब पे यह आ गई मेरा मकसद इससे गिला नही
वही तेरी बेजा नवाजिशें[3] कही महनतो का सिला[4] नहीं ।

न हो फिक्रमन्द ए हमनशी मेरा हाल इतना बुरा नही
जिसे दर्दे इश्क मैं कह सकू अभी दर्द ऐसा उठा नही ।

तेरे हर सितम को कहा करम तेरी हर जफा को कहा वफा
तेरे ऐब तुझ को बता सके तुझे ऐसा कोई मिला नही ।

है जमाना सारा ही ताना जन तेरे इश्क पर अबस[5] ए 'हजीं'
बने कोई कितना भी पारसा[6] मगर उससे कोई बचा नही ।

---

१. भाग्य २. सुख ३. इशारे ४. बदला ५. व्यर्थ ६. शरीफ ।

सितम सहना ही सीखा है वफ़ा ने,
वो न आयें मेरी बिगड़ी बनाने।

ग़नीमत है कि ग़म तो दे रहे हैं,
बदल जायें न कल ये भी ज़माने।

तेरे किरदार की सब बरकतें हैं,
कहां रंगीन थे मेरे फ़साने?

कुछ ऐसे दर्द जो सोये हुए थे,
उन्हें चौंका दिया तेरी जफ़ा ने।

जुदा हैं इश्क़ की राहें जहां से,
यहां क्यों आ गई दुनिया सताने।

तुम्हारे हुस्न की गारतगरी[1] से,
अजल[2] को मिल गये अच्छे बहाने।

न बदली इश्क़ की किस्मत न बदली,
हज़ारों बार बदले गो ज़माने।

---

१. विनाशकारी प्रवृत्ति २. मौत।

फ़स्ले बहार ने न ग़मे रोजगार[1] ने,
दीवाना कर दिया किसी ग़फ़लत[2] शिआर ने।

इक मेहरबां था उसको सितमगर बना दिया,
क्या कर दिया यह गर्दिशे लैलोनहार[3] ने।

तेरा तो सिर्फ़ दिल की तबाही में हाथ था,
तुझ से भी खो दिया है ग़मे रोज़गार ने।

गुलशन में कुछ नहीं ख़सो ख़ाशाक[4] के सिवा,
सुनते है गुल खिलाये थे फ़स्ले बहार ने।

जो मुस्तफीज़[5] उससे हुए हैं वो कुछ कहें,
मैं तो कहूंगा आग लगा दी बहार ने।

अब क्या तवक़्क़ो[6] है तुम्हें उस बुत से ए 'हज़ी',
दुनिया से खो दिया है तुम्हें जिसके प्यार ने।

---

१. दुनिया २. अवहेलना ३. समय का चक्र ४. कूड़ा-करकट ५. लाभान्वित
६. आशा।

ए-हज़ी

खुमखानये[1] हस्ती से ऐ 'हज़ी'
हमको भी मिले सागर लेकिन,
इस प्यास की शिद्दत[2] क्या कहिये
अब भी हैं तश्ना[3] काम से हम।

खुमखानये[1] हस्ती से ऐ 'हज़ी'
हमको भी मिले सागर लेकिन,
इस प्यास की शिद्दत[2] क्या कहिये
अब भी हैं तश्ना[3] काम से हम।

देने वाले ने दिया वो जज्बए कामिल[1] मुझे,
ाग्र पर्दे हों ==र आते नही हाइल[2] मुझे।

मुकूने[3] न निशाते दिल
आता मओ महा

से हंसते
साहिल

जाम

जिस दिन से उठ गये हैं तेरे आस्ता[1] से हम,
वावस्ता[2] हो के रह गये दौरे ख़िज़ा[3] से हम।

तुम ही बिगड़ गये तो जमाने से क्या ग़रज,
दिल में है अब बिगाड़ लें सारे जहां से हम।

है दास्ताने इश्क सरापा[4] बयाने ग़म,
छोड़ें कहां से और सुनाए कहां से हम।

कुछ पासे जब्ते इश्क, कुछ नामूस[5] का ख़याल,
रातों को छुप के रोये हैं सारे जहां से हम।

१. चौखट, दरवाज़ा २. सम्बन्धित ३ पतझड़ का मौसम ४. सर से पाव ५. सम्मान।

देने वाले ने दिया वो जज्बए कामिल[1] मुझे,
लाख पर्दे हों नजर आते नहीं हाइल[2] मुझे।

न सुकूने[3] दिल मुयस्सर न निशाते दिल मुझे,
रास आता ही नहीं ज़िक्रे मओ महफ़िल मुझे।

उम्र सारी कट गई मौजों से हंसते-खेलते,
फ़िक्रे साहिल क्या करूं हरमौज[4] है साहिल मुझे।

मेरी रूदादे[5] मोहब्बत का यही अंजाम है,
रो रहा हूं दिल को मैं और रो रहा है दिल मुझे।

बात सुलझी ही नहीं बदले न तुम बदला न मैं,
इक जहां कहता रहा कातिल तुम्हें बिस्मिल मुझे।

जादहे[6] हस्ती में कितने पेचोखम हैं कुछ न पूछ,
हर कदम पर पेश आती है नई मुश्किल मुझे।

यावरी थी बख्त[7] की जो मैं उभर आया 'हज़ीं',
बारहा डूबा है लेकर नाखुदाए दिल मुझे।

---

१. सच्चा प्रेम २ पड़े हुए ३. शान्ति ४ लहर ५ गाथा ६. जीवन-मार्ग
७. भाग्य।

तुलूए[1] सुब्ह देखा है गुरूबे[2] शाम देखा है,
किया है इश्क़ हमने इश्क़ का अंजाम देखा है।

मिली नज़रें भी देखी है, फिरी नज़रें भी देखी है,
दिखाया जो भी तूने गर्दिशे अय्याम[3] देखा है।

तेरी नीची निगाहें जिनको उठना तक नही आता,
उन्हीं को हमने देते मौत का पैगाम देखा है।

छलकता भी रहे हर दम रहे लबरेज भी साक़ी,
तेरी आखों के सदके हमने वो भी जाम देखा है।

ज़मी पर बसने वालों के मुकद्दर का खुदा हाफ़िज़,
फलक़ पर उड़ने वालों को भी ज़ेरे दाम देखा है।

'हज़ी' नाकामिए उलफ़त नही महदूद तुम ही तक,
सभी को हमने राहे इश्क़ में नाकाम देखा है।

---

१. प्रभात का प्रारम्भ २. संध्या ३. समय का चक्र।

दिल-ए-हज़ीं

कामेश्वर दयाल 'हज़ीं'

इश्क का सोजो[1] ग़म मेरा इश्क की रहगुजर[2] मेरी,
राह मेरी हैं पुरखतर[3] मौत है हमसफर मेरी।

ऐसे छुटे मिले न फिर नामो पयाम कुछ नही,
उनको नही मुझे ख़बर उनको नही खबर मेरी।

दौलते दो जहां न दे दिल दे मुझे दुखा हुआ,
इतना जो हो करम तेरा शुक्र से हो बसर मेरी।

राहे मिली बहुत मगर राह तेरी मिली नही,
खाती रही ठोकरें जिन्दगी उम्र भर मेरी।

शामो सहर[4] मे किस लिए फितरत[5] को इम्तियाज[6] है,
मेरे लिए तो एक है शाम मेरी सहर मेरी।

तुझसे छुपा के तुझको जो देखा तो शर्मसार हू,
बारे गुनाहे चश्म से उठती नही नजर मेरी।

किसको ख़बर है ए 'हज़ी' काटी है कैसे जिन्दगी,
बहता रहा है खून दिल आखों से उम्र भर मेरी।

---

१. जलन २. पथ ३. खतरे से भरी ४ प्रभात ५. प्रकृति ६ भेद।

दिल-ए-हज़ी

तुलूए[1] सुब्ह देखा है गुरूबे[2] शाम देखा है,
किया है इश्क हमने इश्क का अंजाम देखा है।

मिली नजरें भी देखी हैं, फिरी नजरें भी देखी हैं,
दिखाया जो भी तूने गर्दिशे अय्याम[3] देखा है।

तेरी नीची निगाहें जिनको उठना तक नहीं आता,
उन्हीं को हमने देते मौत का पैगाम देखा है।

छलकता भी रहे हर दम रहे लबरेज भी साक़ी,
तेरी आंखों के सदके हमने वो भी जाम देखा है।

ज़मीं पर बसने वालों के मुक़द्दर का खुदा हाफिज,
फलक पर उड़ने वालों को भी ज़ेरे दाम देखा है।

'हज़ी' नाकामिए उलफ़त नहीं महदूद तुम ही तक,
सभी को हमने राहे इश्क में नाकाम देखा है।

१. प्रभात का प्रारम्भ

इश्क का सोज़ो[1] गम मेरा इश्क़ की रहगुज़र[2] मेरी,
राह मेरी हैं पुरख़तर[3] मौत है हमसफर मेरी।

ऐसे छुटे मिले न फिर नामो पयाम कुछ नही,
उनकी नही मुझे खबर उनको नही खबर मेरी।

दौलते दो जहां न दे दिल दे मुझे दुखा हुआ,
इतना जो हो करम तेरा शुक्र से हो बसर मेरी।

राहे मिली बहुत मगर राह तेरी मिली नही,
खाती रही ठोकरें ज़िन्दगी उम्र भर मेरी।

शामो सहर[4] में किस लिए फितरत[5] को इम्तियाज[6] है,
मेरे लिए तो एक है शाम मेरी सहर मेरी।

तुझसे छुपा के तुझको जो देखा तो शर्मसार हू,
बारे गुनाहे चश्म से उठती नही नजर मेरी।

किसको खबर है ए 'हज़ी' काटी है कैसे ज़िन्दगी,
बहता रहा है खून दिल आखों से उम्र भर मेरी।

---

१. जलन २. पथ ३. खतरे से भरी ४. प्रभात ५. प्रकृति ६. भेद।

छूट कर भी जफ़ाओं से तेरी
हासिल हुई राहत कुछ भी नही,
रोना था सितम बेहद हैं तेरे
रोना है कि आफ़त कुछ भी नही।

जब तुमको समझते थे अपना
शक्वा था और शिकायत थी,
अब जान लिया कि गैर हो तुम
अब तुमसे शिकायत कुछ भी नही।

हर आंख को देखा है पुरनम
हर दिल को है पाया वाकिफ़े गम,
इक गम की हकीकत है हमदम
हस्ती की हकीकत कुछ भी नही।

रातों की नींदें नज़्र हुई,
दिल नज़्र हुआ, जां नज़्र हुई,
अब और तवक्को क्या है उन्हें
अब नज़्रे मुहब्बत कुछ भी नहीं।

वो वो न रहे वो हम न रहे
अब कौन करे शिकवा किससे,
अब उनको शिकायत कुछ भी नही
अब हमको शिकायत कुछ भी नही।

यह बर्के तबस्सुम[1], बर्के अदा
यह बर्के मोहब्बत बर्के बला,
आफात की शक्लें बोहतेरी,
आराम की मूरत कुछ भी नही।

यह नाज़ो नज़ाकत हुस्नो अदा,
यह तीरे नज़र, शोख़ी ओ हया,
सब मेरे जगाये जादू है
अर्बाबे नज़ाकत[2] कुछ भी नही।

ऐसा भी है बीता वक्त 'हज़ी'
अब याद में जिसकी रोता हूँ,
मैं कैसे और किस मुँह से कहूँ
उल्फत में राहत कुछ भी नही।

---

१. मुस्कान की बिजली २ हसीन।

मेरी हालत की उनको क्या ख़बर है,
कभी दामन कभी रुख़सार[1] तर है।

जो है हुश्यार उसको आगही[2] क्या ?
वही है बाख़बर जो बेख़बर है।

है ज़द[3] में दिल, जिगर या है रगे जां,
तेरे तीरे नज़र को क्या ख़बर है।

वफ़ा हो, इज्ज़[4] हो या शक्वए[5] ग़म,
उन्हें गुस्सा मेरी हर बात पर है।

चमन फिर भी चमन है हम सफ़ीरो,
वहां की जिन्दगी गो पुरख़तर है।

ये सब तूफ़ां उठा रक्खे हैं दिल ने,
तुम्हारी दोस्ती तो बेज़रर है।

ये तेरे दागहाए सीना वल्लाह !
'हज़ीं' उनकी नज़र भी क्या नज़र है !

---

१. कपोल २. ज्ञान ३. चोट की सीमा ४. विनम्रता ५. शिकायत।

तेरे करम से अपनी भी क्या जिन्दगी रही,
होंठों पे आह, आंख मे कायम बनी रही।

चलता है किसका बस यह मुकद्दर का खेल है,
बिगड़ी किसी की और किसी की बनी रही।

इक उम्र गुज़री दिल की, जिगर की मनाते खैर,
कुछ ऐसे सानहों[1] से घिरी जिन्दगी रही।

आखिर वो एक शोलए जा सोज़[2] बन गई,
जो आग दिल की मुद्दतो दिल में दबी रही।

कश्ती है वो जो बहर[3] की मौजों में छेड़ ले,
कश्ती वो क्या सदा जो किनारे लगी रही।

दुनिया ने मेरा चाके गरीबां[4] न सी दिया,
रस्वाई का तमाशा खड़ी देखती रही।

दीवाना कुछ तो था ही कुछ दुनिया ने कर दिया,
ले ले के तेरा नाम सदा छेड़ती रही।

---

१. घटनाओं २. दिल को जलानेवाली चिनगारी, ३. समुद्र, ४. गरेबां का दुखड़ा।

मैं खींचता रहा वो छुड़ाता चला गया,
दामाने यार से भी सदा छेड़ सी रही।

इक उम्र उलझनों में भटकता रहा है तू,
चारों तरफ़ 'हवी' गो तेरे रोशनी रही।

वो गम पड़े कि होश जुनू से बदल गये,
दुनिया हंसा करे मेरे ग़म तो बहल गये।

उस ने जिन्हें नजर से गिराया वो गिर गये,
संभले हैं वो जो उसकी नज़र में संभल गये।

गिरना भी मेरा काम ज़माने के आ गया,
जो गिर रहे थे, देख के मुझ को संभल गये।

हैं कितने सादालौह[1] ये आशुफ्ता-तबा[2] लोग,
झूठी तसल्लियों से भी अक्सर बहल गये।

करने लगी है बारिशे तीरे सितम हयात,[3]
वो क्या गये हयात के तेवर बदल गये।

मंज़िल तुम्हारी ढूंढ़ रही है तुम्हे 'हज़ी'
तुम जाने बेख़ुदी[4] में किधर को निकल गये।

---

१. भोले २. मनचले ३. जीवन ४. अचेतन।

आलिम[1] मिले, हकीम मिले, फ़लसफी मिले,
लेकिन यही तलाश रही आदमी मिले।

क्या रास आए ज़िन्दगी, कैसे खुशी मिले,
जामे[2] में ज़िन्दगी के जो बेचारगी मिले।

तेरे मुकाब्ले में यह दुनिया है चीज़ क्या,
ठुकरा दूं ज़िन्दगी को अगर ज़िन्दगी मिले।

कुछ और मेरे इश्क की जौलानियां[3] बढ़ें,
कुछ और तेरे हुस्न को ताबिन्दगी[4] मिले।

यह मसलहत सही कोई इंसाफ़ तो नहीं,
बुलबुल को नाला और गुलों को हंसी मिले।

दीवारें क्यों बुलन्द हैं ये ऊंच-नीच की,
क्या हर्ज आदमी से अगर आदमी मिले।

तड़पाएं लाख मुझ को दुआ है मगर यही,
उन को खुदाई और मुझे बन्दगी मिले।

गम थे बहुत अज़ीज़ तुझे, मिल गये 'हज़ी'
लाज़िम[5] नहीं ज़माने की हर इक खुशी मिले।

ıन २. चोला ३. जोश ४. चमक ५. आवश्यक।

दर्द सहना गम उठाना रात-दिन का काम है,
आप क्यों तकलीफ फरमाएं मुझे आराम है।

इश्क़ का अंजाम गम है और उस पर यह सितम,
इब्तदा[1] ता इन्तिहा[2] अंजाम ही अंजाम है।

फूल के खिलने का है गुंचे के मिटने पर मदार,
ज़िन्दगी ही ज़िन्दगी की मौत का पैगाम है।

बेखुदीए इश्क़ अब खुद ही हिजाबेदीद[3] है,
सामने आ जाएं वो पर्दे का अब क्या काम है।

इश्क़ की किस्मत मे महरूमी[4] अज़ल से है 'हज़ी',
वर्ना जामे हुस्ने साकी इक छलकता जाम है।

अब न साक़ी है न कोई जाम है,
होश में आ ज़िन्दगी की शाम है।

क्यों तअक्कुब[1] कर रही है रोज़ोशब[2],
मौत को क्या ज़िन्दगी से काम है।

हर नफ़स[3] से ज़िन्दगी पाता हूं मैं,
हर नफस ही मौत का पैग़ाम है।

सिर्फ़ मैं क्या इस सराए दैह्‌र[4] का,
ज़र्रा-ज़र्रा वाक़िफ़े आलाम है।

क़ह्‌र[5] क्या होगा तेरा यारब पनाह,
ज़िन्दगानी गर तेरा इनआम है।

गम अगर है ज़िन्दगी है शादकाम,
गम नहीं तो ज़िन्दगी नाकाम है।

जानते हैं हम 'हज़ीने' ज़ार को
आदमी अच्छा है गो बदनाम है।

---

१. पीछा २. दिन-रात ३. श्वास ४. संसार ५. गुस्सा।

अब कोई हसरत है न अर्मान है,
ज़िन्दगी बेकैफ़[1] है वीरान है।

आप की तर्जे नवाज़िश[2] देख कर,
जीते रहने का किसे अर्मान है।

दिल की इक हल्की-सी लगज़िश[3] के लिए,
कितनी मुश्किल में हमारी जान है।

मौत ही है मम्बए[4] नौ[5] ज़िन्दगी,
मौत यानी ज़िन्दगी की जान है।

दर्द देना हुस्न का शेवा 'हज़ी',
दर्द सहना इश्क़ का ईमान है।

उनके सितम की जग से फ़र्याद कर रहा हूं,
नामूसे आशिक़ी पर बेदाद[1] कर रहा हूं।

ज़ुल्मो सितम किसी के फिर याद कर रहा हूं,
फिर से गमों की दुनिया आबाद कर रहा हूं।

ओ भूल जाने वाले लुत्फो[2] करम को अपने,
लुत्फो करम को तेरे मैं याद कर रहा हूं।

कुछ ज़िन्दगी हुई थी बर्बाद तेरे हाथों,
कुछ ज़िन्दगी को मैं भी बर्बाद कर रहा हूं।

नाशाद[3] कर गये थे तुम जिस दिले 'हज़ी' को,
झूठी तसल्लियों से मैं शाद कर रहा हूं।

---

१. ज़ुल्म २. कृपा ३. दुःखी।

सितम हर तरह का उठाना पड़ा,
उन्हे उनकी खातिर भुलाना पडा।

वहुत ज्यादा तारीका[1] थी जिन्दगी,
चरागे मोहब्बत जलाना पडा।

नवाज़िश हुई उनकी जब-जब नसीब,
जभी मेरे पीछे जमाना पडा।

दिखाएगे मुह फिर जमाने को क्या,
अगर तेरी महफिल से जाना पड़ा।

वहुत गम दिये जिन्दगी ने मगर,
हमें साथ उसका निभाना पडा।

वहारों के लालच में फस कर 'हज़ी',
कफस[2] को नशेमन बनाना पड़ा।

उनके सितम की जग से फ़र्याद कर रहा हूं,
नामूसे आशिक़ी पर बेदाद[1] कर रहा हूं।

ज़ुल्मो सितम किसी के फिर याद कर रहा हूं,
फिर से ग़मों की दुनिया आबाद कर रहा हूं।

ओ भूल जाने वाले लुत्फ़ो[2] करम को अपने,
लुत्फ़ो करम को तेरे मैं याद कर रहा हूं।

कुछ ज़िन्दगी हुई थी बर्बाद तेरे हाथों,
कुछ ज़िन्दगी को मैं भी बर्बाद कर रहा हूं।

नाशाद[3] कर गये थे तुम जिस दिले 'हज़ी' को,
झूठी तसल्लियों से मैं शाद कर रहा हूं।

सितम हर तरह का उठाना पड़ा,
उन्हें उनकी ख़ातिर भुलाना पड़ा।

बहुत ज़्यादा नारीका[1] थी ज़िन्दगी,
चराग़े मोहब्बत जलाना पड़ा।

नवाज़िश हुई उनकी जब-जब नसीब,
अभी मेरे पीछे ज़माना पड़ा।

दिखाएंगे मुंह फिर ज़माने को क्या,
अगर तेरी महफ़िल से जाना पड़ा।

बहुत ग़म दिये ज़िन्दगी ने मगर,
हमें साथ उसका निभाना पड़ा।

बहारों के लालच में फंस कर 'हज़ी',
क़फ़स[2] को नशेमन बनाना पड़ा।

उनके सितम की जग से फ़र्याद कर रहा हूं,
नामूसे आशिक़ी पर बेदाद[1] कर रहा हूं।

जुल्मो सितम किसी के फिर याद कर रहा हूं,
फिर से गमों की दुनिया आबाद कर रहा हूं।

ओ भूल जाने वाले लुत्फ़ो[2] करम को अपने,
लुत्फ़ो करम को तेरे मैं याद कर रहा हूं।

कुछ जिन्दगी हुई थी बर्बाद तेरे हाथों,
कुछ जिन्दगी को मैं भी बर्बाद कर रहा हूं।

नाशाद[3] कर गये थे तुम जिस दिले 'हज़ी' को,
झूठी तसल्लियों से मैं शाद कर रहा हूं।

उमे एहसासे गम होने लगा है,
मेरी हालत पे अब रोने लगा है।

चमकने वाले हैं अब दाग दिल के,
अंधेरा हर तरफ होने लगा है।

यही चश्मो चरागे[1] आशिकी है,
जिगर के दाग क्यों धोने लगा है?

सुरागे[2] यार मिल जाएगा दिल को,
तलाशे यार में खोने लगा है।

नहीं महदूद[3] दिल ही तक खराबी,
जिगर का खून भी होने लगा है।

गिराया जब से है तेरी नजर ने,
'हज्रो' बे आबरू होने लगा है।

दिलो जान वक़्फ़े वफ़ा हो गये,
मोहब्बत के कर्ज़े अदा हो गये।

बस इक आह निकली थी जिसके सबब,
वफ़ादार नंगे[1] वफ़ा हो गये।

जिन्हे दिल नवाज़ी भी आती नही,
मेरी जान का आसरा हो गये।

मेरे दर्द की मंज़िलत घट गई,
वो क्यों दर्दे दिल की दवा हो गये।

बढ़ा कर जसारत मेरे इश्क़ की,
वो खुद क्यों मुजस्सिम हया[2] हो गये।

'हज़ी' तुम को है आर्ज़ूए अजल,
वो जीने के अर्मान क्या हो गये?

---

१. आड़ २. शर्म।

समर्पण

श्री कामेश्वर दयाल 'हज़ी' जिनका नश्वर शरीर आज हमारे मध्य नहीं है, उनका जीवन-दर्शन सदैव हम सब परिवार-वालों को संचालित करता रहेगा। उनकी सतत प्रेरणा और सबल से हम उनके पदचिह्नों पर चलने का संकल्प लेते हुए महान आत्मा के प्रति अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते है।

—डा० के० के० जैन (धर्मपत्नी)

डॉ० प्रवीण डोगरा—डॉ० रमेश डोगरा
डॉ० प्रतिभा वासुदेवा—देवेन्द्र वासुदेवा
डॉ० सुलक्षणा दत्ता—अरुणकुमार दत्ता

उसे एहसासे गम होने लगा है,
मेरी हालत पे अब रोने लगा है।

चमकने वाले हैं अब दाग दिल के,
अंधेरा हर तरफ होने लगा है।

यही चश्मो चरागे[1] आशिकी हैं,
जिगर के दाग क्यों धोने लगा है?

सुरागे[2] यार मिल जाएगा दिल को,
तलाशे यार में खोने लगा है।

नहीं महदूद[3] दिल ही तक खराबी,
जिगर का खून भी होने लगा है।

गिराया जब से है तेरी नजर ने,
'हर्जी' बे आबरू होने लगा है।

---

१. आंख और दीपक अर्थात् महत्वपूर्ण २. पता ३. सीमित।

जीना दुशवार रहा मरना भी आसां न हुआ,
ज़िन्दगी-मौत का मुझ पर कोई एहसां न हुआ।

झरने झरते ही रहे बांध कुछ ऐसा टूटा,
कौन साअत[1] थी मैं जब अश्क बदामां[2] न हुआ।

ख़ाक[3] में मिलते रहे चश्मे वफ़ा के गौहर,
मेरे अश्कों के लिए आप का दामां न हुआ।

तेरी इक चश्मे[4] करम ही से बदल जाता वक़्त
कितना आसान था वो काम जो आसा न हुआ।

आप आए तो नज़र आप के जाने पर थी,
आपके आने से तस्कीन[5] का सामां न हुआ।

उन से मिलने को 'हज़ी' जान तड़पती ही रही,
आख़िरी वक़्त भी पूरा अर्मां[6] न हुआ।

---

१. क्षण २. दामन आंसुओं से तर ३. मिट्टी ४. कृपा-दृष्टि ५. शान्ति ६. इच्छा।

भूल कर हर्फ़[1] तमन्ना लब[2] पे ला सकता नहीं,
दिल को खातिर इश्क को अजमत घटा सकता नहीं।

बेखुदीए[3] इश्क अब तू ही सहारा दे उसे,
दिल वर्क दे होश तो आराम पा सकता नहीं।

यूँ तड़प कि हमनवा[4] बन जाए सारी काएनात[5],
इश्क क्या जो आलमे इमकां[6] पे छा सकता नहीं।

जश्न कैसा आशियाना बच गया गर बर्क़ से,
आसरा क्या फिर कोई बिजली गिरा सकता नहीं।

आस्ताने यार है यह सज्दागाहे[7] इश्क है,
जान भी जाए यहा से सर उठा सकता नहीं।

ले लिया कह कर 'हजी' यह हुस्न ने आगोश[8] में,
अब तुझे दुनिया का कोई गम सता सकता नहीं।

अब किसी सूरत से भी तस्की[1] नहीं पाता है दिल,
वो तसल्ली दे रहे हैं फिर भी घबराता है दिल।

या कभी कुर्बत[2] से भी तेरी सुकूं मिलता नहीं,
या कभी तेरे तसव्वुर[3] से बहल जाता है दिल।

हर जफ़ाए नौ[4] पे होता है तव्वजोह का गुमां[5],
हर जफ़ाए नौ से इक तस्कीन-सी पाता है दिल।

वादए इमरोज़[6] के पर्दे में दे उस को फ़रेब[7],
वादए फ़र्दा[8] का अब धोखा नहीं खाता है दिल।

आईना दिल का मुकद्दर फिर कभी होता नहीं,
जब गमों की आंच में तप कर निखर जाता है दिल।

दूर जब आता हूं तो अपने का होता है गुमां,
पास जब आता हूं तुझ को गैर-सा पाता है दिल।

अक्ल रहबर बन नहीं सकती कभी दिल की 'हज़ी',
जब खिरद से काम लेता हूं भटक जाता है दिल।

---

१. शान्ति २. निकट होना ३. कल्पना ४. नयी ५. विश्वास ६. आज
७. धोखा ८. कल।

उम्र भर रस्मे उल्फत निभाते रहे,
दर्द सहते रहे, मुस्कुराते रहे।

जिन्दगी हम से आंखें चुराती रही,
जिन्दगी से हम आंखें मिलाते रहे।

जिन्दगी ने नवाजा न हम को मगर,
जिन्दगानी के नग्मात गाते रहे।

वो न आए कभी जिन के ऐजाज[1] में,
रोज बज्मे ख़याली[2] सजाते रहे।

वे नियाजाना वो तो गुजरते रहे,
जिन की राहों में सजदे बिछाते रहे।

वेवफा थी, सितमगर थी, बेदर्द थी,
साथ जिस जिन्दगी का निभाते रहे।

अशियानों पे गिरती रही बिजलियां
उम्र भर अशियाने बनाते रहे।

---

१. सम्मान २. काल्पनिक महफिल।

अपने कब्जे में बस दौलते अश्क थी,
उन पे अश्कों के गौहर लुटाते रहे।

तीरे मिजगां[1] से कोई मफर[2] ही न था,
ग़ैर दिल को जिगर को मनाते रहे।

जिन से उम्मीद अमृत की थी ऐ 'हजी'
वो मए तलखिए[3] गम पिलाते रहे।

---

१. [illegible] २. मुरक्षा ३. दुःखों की कटु शराब।

यह कैसा रोग लगाया था जिन्दगी के लिए,
तमाम उम्र रहे नालाकश[1] किसी के लिए।

यह माना होश जरूरी है ज़िन्दगी के लिए,
मगर यह होश ही दुश्मन है आगही[2] के लिए।

खुद अपने हाले परीशां पे आज हंसना पड़ा,
तरस रहे थे बहुत दिन से लब हसी के लिए।

अजब तरह की है मजबूरियां मोहब्बत में,
तुझे भुलाना पड़ा है तेरी खुशी के लिए।

हमारे दम ने मोहब्बत को जिन्दगी बख्शी,
हमीं तरसते है उल्फत में ज़िन्दगी के लिए।

मुझी-सा वो कोई आशुफ्ता[3] सर रहा होगा।
चढ़ा था दार[4] पे जो शाने आशिक़ी के लिए।

खुदा करे तुझे दुनिया की हर खुशी हो नसीब,
बहा ले अश्क कभी मेरी बेबसी के लिए।

---

१. रोते रहना २. ज्ञान ३ सिरफिरा ४. फांसी।

जो तू नहीं तो तेरी याद ही सही ऐ दोस्त,
सहारा चाहिए थोड़ा-सा जिन्दगी के लिए।

मताए'[1] इश्क का तेरी 'हज़ी' खुदा हाफिज़,
कि साथ अक़्ल का रहज़न[2] है रहबरी के लिए।

---

१. दौलत २. लुटेरा।

दिल खून रो रहा है मगर आंख नम नहीं,
दुनिया समझ रही है मुझे कोई गम नहीं।

ताजा सितम भी कोई वराहे करम नहीं,
क्या अब तेरी जफाओं के लायक़ भी हम नहीं।

वो आंख क्या जो गैर की ख़ातिर न रो सके,
वो दिल ही क्या कि जिसमें जमाने का गम नहीं।

कोई तो बात हो मैं कहूं जिसको इलतिफात,
तेरा करम नहीं कोई तेरा सितम नहीं।

मुझको तो उस की शाने करीमी पे नाज है,
सजदे करे वो जिस को यकीने करम नहीं।

न इमतियाज़े[1] रंग न मिल्लत[2] की कैद हैं,
यह मैकदा है आइये दैरो हरम[3] नहीं।

---

१. अन्तर २. धर्म ३. मन्दिर और कावा।

अपना ज़मीर बेच के खुशियां खरीद लें,
ऐसे तो इस जहां के तलबगार हम नहीं।

झूठी तवक्कोआत' का बाइस है ऐ 'हज़ी',
उनको तवज्जो उनकी जफ़ाओं से कम नहीं।

जो दम बदम यूं हवादिस[1] की चोट खाएगा,
यह दिल का आईना इक रोज टूट जायेगा।

है ज़द में बर्क की हर शाख हर शजर[2] नादां,
जो बच सके वो नशेमन[3] कहां बनायेगा।

वो दर्दे दिल जो मेरी जां से रोज़ खेलता है।
कभी वो मेरा मसीहा भी बन के आयेगा।

कभी तो आओ अंधेरों में रोशनी बनकर
शमें उमीदों की कब तक कोई जलायेगा।

यू सब्रो शुक्र से सह लेगा कौन जुल्म 'हज़ी',
हमारे बाद जमाना किसे सतायेगा।

हो के आज़ुर्दा[1] ज़िन्दगानी से,
उठ गया कोई दारे फ़ानी से।

जाने कितने सफ़ीने[2] डूब गये,
नाख़ुदाओं[3] की मेहरबानी से।

हर ख़ुशी गम का पेशख़ैमा है,
यह सबक़ पाया ज़िन्दगानी से।

दोस्ती ने तेरी किया साबित,
बैर था हम को ज़िन्दगानी से।

इस में ज़िक्रे ख़ुशी नही लेकिन,
लोग ख़ुश है मेरी कहानी से।

हर ख़ुशी अजनबी-सी लगती है,
काम क्या दिल को शादमानी से।

ज़िन्दगी दर्द बन गई है 'हज़ी',
दर्द वो पाये हैं जवानी से।

---

१. दुखी २. बेड़े ३. खेवनहार।

रहम खा मौसमेगुल[1] अब मुझे आवाज़ न दे,
पर शकिस्ता[2] हूं मुझे दावत पर्वाज़े[3] न दे।

रहरवे राहे मोहब्बत हूं ग़रज़ क्या उस से,
कह दो दुनिया को कि दुनिया मुझे आवाज न दे।

उस का जीना भी कोई जीना है इस दुनिया में,
जिस को पैग़ामे मोहब्बत निगहे नाज़ न दे।

नाख़ुदाओं का यगानों[4] का भरम खुलने दे,
डूबने वाले किसी को भी तू आवाज न दे।

जिन निगाहों से दिया था कभी पैग़ामे हयात,
उन से पैग़ामे अजल ए निगहे नाज़ न दे।

मैंने मर-मर के बनाया है शिवाला दिल का,
निगहे नाज़ को तखरीब का अंदाज़ न दे।

इश्क़ में मौत ज़मानत है वफ़ा की ऐ दिल,
उफ़ वो बदबख़्त जिसे इश्क़ यह ऐज़ाज़ न दे।

---

१. बसंत २. टूटा हुआ ३. उड़ान ४. अपनों।

एक ख़ामोश परस्तिश[1] है इबादत[2] उस की,
हुस्न से इश्क़ तो कर, हुस्न को यह राज़ न दे।

महफ़िले ऐशो तरब सोज़ से भर जायेगी,
दिल शकिस्ता हूं मेरे हाथ में अब साज़ न दे।

सोज़ भी साज़ भी मिला है उसी दर से 'हज़ी',
बात क्या वो है तुझे सोज़ तो दे साज़ न दे।

---

१. पूजा २. आराधना।

खुशी भी जाने क्यों वजहे सुकूने दिल नहीं होती,
किसी सूरत भी क्यों दिल को खुश हासिल नहीं होती।

गुज़र जा वस्ल की सरहद से कतरा के ओ दीवाने,
वो मिलते हैं जहां वो इश्क़ की मंज़िल नहीं होती।

सिखाता कौन फिर हम को सलीके जीने-मरने के,
अगर तेरी मोहब्बत साजगारे दिल नहीं होती।

हंसे दिल खोलकर दुनिया किसी के रक्सेबिस्मिल[1] पर,
मगर क्या उस की हालत रहम के काबिल नहीं होती।

शरीके ग़म हो गर दुनिया तो ग़म दुनिया से उठ जाये,
यह दुनिया क्यों किसी के दर्द में शामिल नहीं होती।

अगर हम जैसे अहले दिल नहीं होते तो दुनिया में,
तेरे जल्वे नहीं होते, तेरी महफ़िल नहीं होती।

---

१. घायल का नृत्य।

हवस[1] भी कुर्ब[2] से दिल के सदाएं देती रहती है,
हर इक आवाज़ ओ नादा सदाए दिल नही होती।

'हज़ो' दुशवारियां रखती हैं सरगर्मे अमल[3] सब को
बड़ी मुश्किल से कटती उम्र गर मुश्किल नही होती।

---

१. वासना २. निकट ३. कार्य मे व्यस्त।

जिन्हें लिखना पड़ा है खूने दिल खूने तमन्ना से,
किताबे ज़िन्दगी में ऐसे अफ़साने भी शामिल हैं।

'हज़ीं' जब्रे मशीयत[1] इस से बढ़कर और क्या होगा,
करम[2] होने नहीं देता करम पर वो तो माइल हैं।

---

१. भाग्य की धाधली २. कृपा ।

मुझे जब ही से जीने के सभी सामान हासिल है,
कि जब से मेरी खुशियों में किसी के दर्द शामिल है।

बनें दीवाने या फर्जाने[1] हो यह फैसला कैसे,
न दीवाने ही कामिल[2] है न फ़र्जाने ही कामिल हैं।

शरीके गम जिन्हें चाहा था करना वो नहीं आये।
हमारे गम में वर्ना आज बेगाने भी शामिल है।

तलब दुनिया करूं मैं या करूं उक्बा बता जाहिद,
जरा ईमान से, दोनों जहा तेरे मुकाबिल हैं।

वही मौजें[3] रवां है जिन में कश्ती जिन्दगानी की,
न रास आएं तो तूफा हैं जो रास लाए तो साहिल हैं।

वफा हो या जफा हो गैज[4] हों इकराम हों उन के,
सभी परखे हुए हैं उन के सब अन्दाज कामिल हैं।

चतुर २. निपुन ३. लहरें ४. गुस्सा।

दिल-ए-हजीं